



अधिकतम 36.0 डिग्री
न्यूनतम 27.0 डिग्री

हरिभूमि रेवाड़ी मूिम

रोहतक, रविवार 30 अगस्त 2026

12 त्योहारों पर यात्रियों को राहत: सितंबर में 17 जोड़ी



12 आईटीआई में दाखिलों के प्रति नहीं रुझान, एक तिहाई



RPS COLLEGE OF VETERINARY SCIENCES Permanently recognized by VCI & Affiliated to LUVAS, Hisar

2 Year Diploma Course
VLDD COURSE

Eligibility:- Must have passed XII in Any Stream (A Govt. Job Oriented Diploma)

90 SEATS
54 SEATS STATE QUOTA
36 SEATS MANAGEMENT QUOTA

Admissions Open 2026-27

Last Date of Registration
13 September, 2026



- * World Class AC Infrastructure
- * Multi-Speciality Veterinary Hospital

RPS पशु अस्पताल, बलाना

- ▶ पशुओं के अल्ट्रासाउंड व X-Ray की सुविधा
 - ▶ पशुओं के खून, दूध, मूत्र, मल (गोबर) व चमड़ी आदि की उच्च स्तरीय मशीनों द्वारा जांच की सुविधा
 - ▶ गर्भ परीक्षण जाँच
 - ▶ छोटे व बड़े पशुओं के सभी प्रकार के ऑपरेशन करने की सुविधा
 - FREE OPD
 - 24 घंटे सेवा उपलब्ध
 - SUNDAY OPEN
- CALL FOR ADMISSIONS ☎ 01285-241430, 8222888337, 9812008844
- 8th Milestone Balana, Mahendergarh (HR) www.rpsvetcollege.org rpsvetcollege@gmail.com

खबर संक्षेप

बाइक को टक्कर मारी फिर लाठी-डंडों से हमला

रेवाड़ी। शनिवार देर रात भाड़ावास रोड पर अनाजमंडी के सामने एक बाइक पर आ रहे पिता-पुत्र की बाइक को पहले कुछ लोगों ने कार से टक्कर मारकर गिरा दिया। इसके बाद युवक पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया। बाइक से गिरकर एक बच्चा और उसका पिता घायल हो गए। दोनों को ट्रॉमा सेंटर ले जाया गया, जहाँ एक गुट के कई लोग पहुंच गए। सूचना मिलते ही सिटी एसएचओ तुरंत अस्पताल पहुंचे और वहाँ मौजूद लोगों को बाहर खदेड़ दिया। अनाजमंडी के सामने रात को बावल की ओर से आ रहे पिता-पुत्र की बाइक को कार से टक्कर मारने के बाद युवक पर कुछ लोगों हमला कर दिया। सूचना मिलने के बाद ईआरवी ने मौके पर पहुंचकर घायलों को ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। रात को जब घायलों का उपचार चल रहा था, तो दूसरे पक्ष के लोग भी ट्रॉमा सेंटर पहुंच गए। झगड़े की आशंका को देखते हुए सिटी एसएचओ रात को करीब साढ़े 11 बजे ट्रॉमा सेंटर पहुंचे।



सड़क किनारे आराम फरमाते हैं सैकड़ों गोवंश, मालिकों की सेहत पर असर नहीं

पशु पकड़ने हैं तो जागना होगा नींद से, रात को प्रमुख चौराहों पर जमावड़ा

■ एक माह में पशुओं के कारण जा चुकी है दो लोगों की जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

लगभग एक माह के दौरान पशुओं के कारण दो लोगों की जान चुकी है। एक दिन पहले ही एक व्यक्ति गोवंश के हमले से गंभीर रूप से घायल हो गया। बार-बार पशुओं के हमले के बावजूद शहर से पशुओं को बाहर निकालने की मुहिम अंजाम तक पहुंचने से पहले ही दम तोड़ रही है। पशु पालकों को केस दर्ज होने की चेतावनी का भी कोई असर नहीं हुआ है। अगर बेसहारा पशुओं को पकड़ना है, तो दिन की बजाय रात को अभियान शुरू किया जाए। रात के समय सैकड़ों की संख्या में गोवंश प्रमुख चौराहों से लेकर पॉश एरिया तक में आराम फरमाते हैं। शुक्रवार की रात



रेवाड़ी। रात के समय अनाजमंडी रोड पर गोवंश का जमावड़ा। फोटो: हरिभूमि

दो मौतों के बाद भी नहीं हुआ समाधान

बेसहारा पशुओं के कारण शहर में लगभग एक माह की अवधि में दो लोगों की मौत हो चुकी है। एक पशु मालिक पर एफआईआर भी दर्ज हो चुकी है, परंतु इससे पशु मालिकों पर कोई असर नहीं पड़ा है। पशु पकड़ने वाले कर्मचारियों को डरा-धमकाकर पशुओं को छुड़ा लिया जाता है। ऐसे में पशुओं की संख्या कम होने का नाम नहीं ले रही है। शहर में ऐसे पशुओं की संख्या 3 हजार के आसपास मानी जा रही है, जिनके मालिक मौजूद हैं।

‘हरिभूमि’ ने शहर का जायजा लिया, तो प्रमुख चौराहों से लेकर खाली स्थानों तक पर सैकड़ों की संख्या में गोवंश आराम फरमाते पाया गया। शहर में बेसहारा पशुओं से अधिक

ऐसे पशुओं की संख्या है, जिनके मालिक दूध निकालने के बाद सुबह-शाम उन्हें सड़कों का रास्ता दिखा देते हैं। ऐसे पशुपालकों के पास पशुओं को बांधने से लेकर उन्हें चारा

पुरानी सब्जी मंडी में व्यक्ति पर फिर हमला

शुक्रवार देर रात्रि पुरानी सब्जी मंडी से गुजर रहे एक व्यक्ति पर गाय ने हमला कर दिया, जिससे व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। आसपास के लोगों ने उसे ट्रामा सेंटर पहुंचाया, जहां से उसे पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। गांव धनौरा निवासी अजीत किशोर कास से रेवाड़ी आए थे। जब वे पुरानी सब्जी मंडी से गुजर रहे थे तो एक गाय ने उन पर हमला कर दिया। गाय के हमले से उनके सिर में काफी चोटें आईं और वे पूरी तरह जख्मी हो गए। आसपास के लोगों ने उन्हें गाय से बचाया और घायल अवस्था में ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया, जहां से डॉक्टरों ने उनकी गंभीर हालत को देखते हुए पीजीआई रेफर कर दिया।

खिलाने तक की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। यह पशु मालिक सुबह और शाम के समय दूध निकालकर उसकी बिक्री से मोटा पैसा कमा रहे हैं। चारा खिलाने के नाम पर पशुओं को बाहर खदेड़ दिया जाता है। दिन के समय शहर की व्यस्त सड़कों पर वाहन और लोगों की आवाजाही के कारण पशु इधर-उधर रहते हैं, लेकिन रात होते ही इनका प्रमुख चौराहों और सड़कों पर जमावड़ा लग जाता है। नाईवाली चौक, महाराणा प्रताप

चौक, धारूहेड़ा चुंगी, अग्रसेन चौक सहित कई स्थानों पर दर्जनों बेसहारा पशु सड़क पर बैठे नजर आते हैं। कई बार वाहन की रोशनी पड़ने या हॉर्न बजने पर पशु अचानक सड़क पर दौड़ पड़ते हैं, जिससे वाहन चालकों के लिए संभलना मुश्किल हो जाता है। कई बार पशुओं की चपेट में आकर वाहन चालक हादसों का शिकार हो जाते हैं। सड़कों से खदेड़ते समय बेकाबू पशु लोगों पर हमला कर देते हैं।

फर्जी कस्टमर केयर नंबर से 1.43 लाख की ठगी, दो काबू

■ बातचीत के दौरान ठगों ने महिला से मांगी बैंक संबंधी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ रेवाड़ी

साइबर थाना पुलिस ने अगस्त माह में एक महिला को कस्टमर केयर के फर्जी नंबर से लगभग 1.43 लाख रुपये की ठगी का शिकार बनाने के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उन्हें कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत के तहत जेल भेज दिया गया।

पुलिस शिकायत में धारूहेड़ा की एक सोसायटी में रहने वाले संजय कुमार ने बताया कि 3 अगस्त को उसकी पत्नी ने मीशो एप पर कुछ सामान मंगवाया था। सामान का ऑर्डर नहीं हुआ, लेकिन खाते से 1398 रुपये कट गए। रकम वापस नहीं आने पर उनकी पत्नी ने गूगल पर मीशो का कस्टमर केयर नंबर तलाश और एक नंबर पर संपर्क किया। फोन उठाने वाले व्यक्ति ने खुद को मीशो कस्टमर केयर से बताया। उसने कहा कि करीब 30 सेकंड बाद एक कॉल आएगी। इसके बाद महिला के पास एक अज्ञात नंबर से फोन आया। बातचीत के दौरान ठग



रेवाड़ी। पुलिस गिरफ्त में ठगी के आरोपी। फोटो: हरिभूमि

ने महिला से बैंक संबंधी जानकारी हासिल कर ली। जानकारी देने के कुछ समय बाद उसके बैंक खाते से 142807 रुपये की राशि दूसरे खातों में ट्रांसफर हो गई। पुलिस ने उसकी शिकायत पर केस दर्ज करने के बाद जांच शुरू की थी। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में जगाधरी के महाबीर कॉलोनी निवासी कमल वर्मा और जगाधरी के ही तेजली गेट निवासी चेतन को गिरफ्तार कर लिया। कमल के बैंक खाते में ठगी की रकम में से लगभग 50 हजार रुपये ट्रांसफर हुए थे। चेतन ने उसका खाता साइबर ठगों को मुहैया कराने में मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी।

TATA की पेशकश



TANISHQ x DE BEERS GROUP
For Natural Diamonds

TANISHQ
Festival
Of Diamonds

नेचुरल डायमंड्स से सजी मनमोहक डिजाइन,
जो आपकी चमक को सबसे अलग बनाएँ

पलैट 20% छूट
10,000+ डिज़ाइन्स में डायमंड की कीमत पर*

0% कदौती*

डायमंड ज्वेलरी खरीदने पर 9 कैप्टल सितारे कम के पुराने सोने के एक्सचेंज पर।



Talk to our jewellery expert to know more ☎ 1800 2966 677

Buy online at tanishq.co.in

or Download our App *Conditions apply, For T&C visit our website.

शोरूम : तनिष्क शोरूम, एससीओ-40, सेक्टर-1, मॉडल टाउन, बावल रोड, रेवाड़ी टेली : 70829-95610

निवेश से पहले समझें कौन सा प्लान सबसे बेहतर

म्यूचुअल फंड निवेश में एक्सपेंस रेटियो का महत्व इसलिए बढ़ जाता है, क्योंकि निवेश लंबे समय के लिए किया जाता है। यदि दो समान योजनाओं में से एक में खर्च लगातार थोड़ा अधिक है, तो कई वर्षों में इसका असर निवेश के कुल मूल्य पर पड़ सकता है। इसीलिए निवेशक को केवल पिछले रिटर्न को देखकर फैसला नहीं करना चाहिए। उसे एक्सपेंस रेटियो, फंड का प्रदर्शन, जोखिम, निवेश का उद्देश्य और अपने निवेश की अवधि जैसे पहलुओं को भी देखना चाहिए।

बिजनेस डेस्क

म्यू चुअल फंड में निवेश का फैसला करते समय केवल यह देखना पर्याप्त नहीं है कि कौन सा फंड अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि वह डायरेक्ट प्लान में निवेश कर रहा है या रेगुलर प्लान में। दोनों विकल्पों में आमतौर पर एक ही म्यूचुअल फंड स्कीम और एक ही फंड मैनेजर के जरिए निवेश किया जाता है, लेकिन दोनों की लागत संरचना अलग होती है। यही अंतर लंबी अवधि में निवेश के रिटर्न पर असर डाल सकता है। निवेशक के लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान में अंतर क्या है और इनमें से कौन सा विकल्प उसके लिए बेहतर है। इसका जवाब हर निवेशक के लिए एक जैसा नहीं हो सकता। यदि निवेशक खुद फंड की रिसर्च कर सकता है और अपने पोर्टफोलियो को संभालने में सक्षम है तो डायरेक्ट प्लान कम लागत वाला विकल्प हो सकता है। वहीं नए या ऐसे निवेशक जिन्हें फंड चुनना और निवेश प्रबंधन में मदद चाहिए, उनके लिए रेगुलर प्लान उपयोगी हो सकता है।



रेगुलर प्लान में निवेशक म्यूचुअल फंड कंपनी यानी एएससी तक सीधे नहीं पहुंचता। वह बैंक, म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटर, ब्रोकर या वित्तीय सलाहकार के माध्यम से निवेश करता है। निवेश प्रक्रिया पूरी करने के साथ-साथ डिस्ट्रीब्यूटर निवेशक को फंड चुनने, कागजी प्राप्ति और निवेश से जुड़ी दूसरी सेवाओं से भी मदद कर सकता है। इसी सेवा को लागत भी होती है। म्यूचुअल फंड कंपनी डिस्ट्रीब्यूटर को कमीशन देती है और यह खर्च फंड के एकाग्रण से रेटियों में शामिल होता है। इसलिए आमतर पर रेगुलर प्लान का एएसएसपेक्ट रेटियों की पंक्तियों के डायरेक्ट प्लान की तुलना में अधिक होता है।

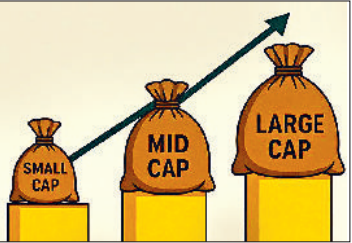
» रेगुलर प्लान ऐसे निवेशकों के लिए उपयोगी हो सकता है जिन्हें निवेश की जानकारी सीमित है या जो फंड चुनने और पोर्टफोलियो संभालने में विशेषज्ञ की मदद चाहते हैं।

» निवेशक के लिए कई बार सही फंड चुनना, जोखिम का आकलन करना, निवेश की अवधि तय करना और पोर्टफोलियो में बदलाव करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ऐसे में डिस्ट्रीब्यूट की सहायता सुविधा प्रदान कर सकती है। हालाँकि निवेशक को यह भी समझना चाहिए कि इस सुविधा की लागत फंड के खर्च में शामिल होती है।

डायवर्सक प्लानया रेगुलर प्लान चुनने से पहले निवेशक को अपनी वित्तीय स्थिति और जानकारी का आकलन करना चाहिए। केवल वह सोचकर डायवर्सक प्लान चुनना उचित नहीं है कि उसका एसएसएस रेटियो कम है। इसी तरह केवल सुविधा के लिए रेगुलर प्लान लेना भी जरूरी नहीं है। निवेशक को यह देखना चाहिए कि वह कितने समय के लिए निवेश कर रहा है, कितना जोखिम उठा सकता है, फंड की लागत कितनी है और क्या वह अपने निवेश की निगरानी खुद कर सकता है।

डायरेक्ट प्लान और रेगुलर प्लान के बीच चुनाव व्यक्तिगत जरूरत पर निर्भर करता है। डायरेक्ट प्लान में कम लागत का फायदा मिल सकता है, जबकि रेगुलर प्लान में डिस्ट्रिब्यूटर की सहजताएं और सुविधा मिलती हैं। दोनों में निवेश का बाजार जोखिम बना रहता है। इसलिए निवेश करने से पहले केवल प्लान का नाम देखकर फैसला न करें। फंड के उद्देश्य, जोखिम, एक्सपेंस रेटियो, पिछला प्रदर्शन, निवेश अवधि और अपनी वित्तीय जरूरतों को समझना जरूरी है। जरूरत पड़ने पर योग्य निवेश सलाहकार से सलाह लेकर ही निवेश का निर्णय लेना बेहतर है।

लार्ज, मिड या स्मॉल कैप कहां बनेगा बड़ा फंड

**बिजनेस डेस्क**

हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी शुरू करने वाले निवेशक के मामले सबसे बड़ा साला होना है कि पिछा लार्ज, जिम या स्मॉल कैप फंड में लगाना जाए। तीनों कैटेगरी में जोखिम और रिस्क के संभावना अलग अलग है। इसलिए फंडल पिछले एक साल के रिस्क को देखकर फंडमें एक फंड की रणनीति नहीं है। इक्विटी फंड्स, फंड में निवेश का फायदा नहीं बहुत तुरंत से मिल सकता है, जब निवेशक लंबी अवधि तक बाजार में बना रहे और उतार-चढ़ाव के दौरान धारदार एसआईपी बंद न करे। पहले समझिए तीनों कैटेगरी में अंतर

इसके लिए वर्गीकरण के अनुसार लार्ज कैप फंड मुख्य रूप से बाजार पूंजीकरण के आधार पर देश की शीर्ष 200 कंपनियों में निवेश करते हैं। 101वीं से 250वीं रैंक वाली कंपनियां मिडकैप और सबसे बड़ की कंपनियां स्मॉल कैप श्रेणी में आती हैं। लार्ज कैप कंपनियां आकार में बड़ी और स्थिरता होती हैं। इसलिए इनके कारोबार में अपेक्षाकृत स्थिरता देखने को मिल सकती है। हालांकि इसका मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि लार्ज कैप फंड सुरक्षित या जोखिम-मुक्त हैं। शेयर बाजार में बड़ी विराट आने पर इनमें भी असुरक्षा हो सकता है। मिड कैप कंपनियां आकार में लार्ज कैप से छोटी होती हैं, लेकिन इनमें कारोबार तेजी से बढ़ने की संभावना हो सकती है। इसी वजह से इनके शेयरों में उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है।

आज कोई निवेशक पहली बार इन्विट्री में म्यूचुअल फंड में एसआरआई शुरू कर रहा है और बहुत ज्यादा उतार-चढ़ाव नहीं चाहता, तो लंबा कारोबार कैप फंड अपेक्षाकृत आसान शुरुआत हो सकती है। बड़ी कंपनियाँ के पास आम तौर पर लंबा कारोबारी ट्रैक रिकॉर्ड और मजबूत कारोबार होता है। फिर भी निवेशक को यह समझना चाहिए कि लार्ज कैप का मतलब गारंटीड रिटर्न नहीं है। बाजार में 15-20% की उछाल-उड़ाल आती है तो लार्ज फंड भी नीचे जा सकते हैं। अन्तर केवल इतना है कि मिड कैप और एसआरआई कैप की तुलना में उतार-चढ़ाव कई बार कम हो सकता है।

5,000 रुपये को मासिक वेतन आर्द्धी 15 साल तक जारी रखने पर कुल निवेश 9 लाख रुपये होगा उदाहरण के लिए, पिछले 15 वर्षों के औसत सालाना रिटर्न को आधार मानकर लार्ज कैप के लिए लार्ज कैप 11.9%, मिड कैप के लिए 17.2% और स्मॉल कैप के लिए करीब 14.7% रिटर्न माना जा सकता है, अलग-अलग कटेडोरी में निवेश से रकम अलग बच सकती है। उपरोक्त अनुमान पर 2,500 लॉन्ग कैप, 1,500 मिड कैप और 1,000 रुपये स्मॉल कैप में लगाने पर ऐतिहासिक औसत रिटर्न को सित उदाहरण के तौर पर इस्तेमाल करके पर 15 साल में करीब 28.7 लाख का फंड बन सकता है। इस लगभग 9 लाख मूल निवेश और करीब 19.7 लाख का अनुमानित लाभ शामिल होगा। हालांकि यह सिर्फ गणितीय अनुमान है। बाजार का वास्तविक रिटर्न हर साल अलग हो सकता है और भविष्य में यही रिटर्न देनाया जाएगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है।

बिजनेस डेस्क

समय से पहले एकद्वी बंद करने का सबसे बड़ा असर मिलने वाले ब्याज पर पड़ सकता है। एकद्वी बनाने समय जिस ब्याज दर का निर्धारण किया गया था, जरूरी नहीं कि समय से पहले एकद्वी बंद करने पर उसी दर से ब्याज मिले। बैंक आमतौर पर उस अवधि के आधार पर ब्याज की गणना कर सकता है, जितने समय तक रकम वास्तव में एकद्वी में जमा रही। इसके अलावा समयपूर्व निकाली का शुल्क भी लगाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि आपने पांच साल के लिए एकद्वी कराई थी, लेकिन दो साल बाद ही उसे बंद कर दिया, तो आपको पांच साल की तय ब्याज दर का पूरा लाभ नहीं मिल सकता।

एफडी से मिलने वाला ब्याज आपको आय का हिस्सा माना जाता है और उस पर लागू आयकर नियमों के अनुसार कर देना पड़ सकता है। इसलिए समय से पहले एफडी बंद करने का फैसला करते समय केवल ध्यान और ब्याज में होने वाले कुलसमान पर ही श्रुक्त न दें। यह भी देखें कि एफडी से अब तक कितना ब्याज अर्जित हुआ है और उस पर आपकी कर देना पड़ने की कितनी खबर सकती है। अलग-अलग निवेशकों की कर स्थिति अलग हो सकती है।



अगर आपको थोड़े समय के लिए पैसों की जरूरत है तो पूरी एकपत्री बंद करना हमेशा जरूरी नहीं है। अपने बैंक से यह बात करवा जा सकता है कि एकपत्री के बदले कर्ज या अधिग्रहण की सुविधा उपलब्ध है या नहीं। इस व्यवस्था में एकपत्री को जारी रखते हुए उसकी जमानत के आधार पर जरूरत की रकम प्राप्त की जा सकती है। इससे एकपत्री पूरी तरह बंद करने से होने वाले ब्याज के नुकसान से बचने का मौका मिल सकता है। हालांकि, इस विकल्प में बैंक कर्ज पर ब्याज और अन्य शुल्क ले सकता है।

अगर आपको एफडी में जमा पूरी रकम की जरूरत नहीं है तो पहले यह पता करें कि आपका

पैसों की जरूरत में एफडी बंद करना जरूरी नहीं, घटेगी ब्याज की रकम

वै क की साधवि जमा याथी एफडी को सुरक्षित निवेश का साधन माना जाता है। यहाँ जगह है कि बड़ी संख्या में लोग अपनी बचत को निश्चित अवधि के लिए एफडी में करना करते हैं। लेकिन कई बार अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है और निवेशकों को एफडी की अवधि पूरी होने से पहले ही रकम निकालने का फैसला करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में एफडी को खोलने से पहले बंद करना संभव है, लेकिन इसके कुछ आर्थिक मुकसान भी हो सकते हैं। एफडी शुरू करते समय बैंक एक निश्चित अवधि और ब्याज दर तय करता है। यदि निवेशक उस अवधि के पूरा होने से पहले एफडी बंद करता है तो जरूरी नहीं है कि उसे शुरुआत में तय ब्याज दर का पूरा लाभ मिले। बैंक के नियमों के अनुसार ब्याज में कटौती भी जा सकती है और कुछ मामलों में समय से पहले एफडी बंद करने का शुल्क भी लगाया जा सकता है। इसलिए जल्दबाजी में एफडी तोड़ने के बजाय पहले इन पांच जरूरी बातों को समझ लेना चाहिए।

1. समय से पहले एफडी बंद कर पलग सकता है शुल्क

सबसे पहले अपने बैंक के नियमों की जानकारी लें। एफडी की तय अवधि पूरी होने से पहले पैसा निकालने पर बैंक समय-पूरि निकासी शुल्क या जुर्माना लगा सकता है। यह शुल्क बैंक, एफडी की अवधि और जमा की गई रकम के अनुसार अलग-अलग हो सकता है। इसलिए एफडी बंद करने से पहले बैंक से यह ज्ञात कराएं कि शुल्क के रूप में कितनी राकम कटायी जाएगी और एफडी बंद करने के बाद आपकी खाते में शेषराशि का रूप से किन्नी राशि आएगी।

त्योहारों पर आसान किस्त
और छूट के प्रस्ताव बढ़ेंगे



योंधारों का मौसम शुरू होते ही बाजार और ऑनलाइन बाजारों में पंजीकृत और तटस्थ-रहित के आकर्षक और ओपन एंटरप्राइज होते हैं। मोबाइल, टीवी, फ़िज, वॉशिंग मशीन से लेकर कर्माचार और दूसरे महंगे सामान पर भारी छूट के साथ असाधारण मारिकट किस्मों के प्रस्ताव बाह्यकों को खरीदारों के लिए आकर्षित करते हैं। इनमें नो-कोस्ट ईमेल, ऑनलाइन या डिजिटल वाणिज्य वाली किस्म का प्रस्ताव सबसे उच्च गुणवत्ता के मुताबिक है। बाह्यकों को लगता है कि महंगे सामान बिना अतिरिक्त व्यय के छोटे-छोटे मुताबिकों में खरीदा जा सकता है। लेकिन योंधारों को खरीदारों में इस तरह के प्रस्तावों को देखकर तुरंत फैसला करना समझदार नहीं है। नो-कोस्ट का मतलब वह जरूरी नहीं कि खरीदार को मुफ्त में से जुड़ी कोई लागत नहीं होनी होगी। कई मामलों में प्रत्येक श्रमिक, कर्म, छूट, हूई तकाल छूट, समय, पहले कर्ज बंद करण का शुल्क या देर से मुताबिक नुमांजा बाह्यकों की कुल लागत बढ़ा सकता है। अलग-अलग नुमांजा बहक और अग्रदाता अपनी अलग शर्तें रखते हैं। इसलिए, 2026 में बैंकों की प्रकाशित शुल्क तालिकाओं के संदर्भ में सुविधा के लिए प्रत्येक श्रमिक और समय के मुताबिक शुल्क के अलग-अलग प्राधान्य दिखाइए देंगे। इसलिए इस योंधारों मौसम में खरीदारी से पहले केवल मारिकट किस्म नहीं, बल्कि कुल मुताबिक पर नजर रखना जरूरी है।

पहले तय करें, सामान की जरूरत है या नहीं
 वीथियों में सबसे बड़ी गलती यही होती है कि वाहक
 जरूरत से ज्यादा खरीदारी कर लेता है। इन्होंने बस
 छुट्ट देवाना नहीं मिलेगा या 'इतनी कम बिस्किट
 सामान मिल रहा है' जैसी सोच खरीदारी का फैसला
 प्रभावित कर सकती है। ईंसले बचने का आसान तरीका
 है कि बाजार जाने या ऑनलाइन खरीदारी शुरू करने
 से पहले जरूरी सामान की सूची बना लें। जो सामान
 पहले से खरीदेगा की योजना में नहीं था, उसे केवल छुट्ट
 या किस्त के प्रस्ताव के कारण खरीदने से बचें। याद
 रखें, जिस सामान की जरूरत नहीं है, उस पर मिलने
 वाली बड़ी छूट भी वास्तव में बचत नहीं है। उदा., उसका
 मासिक किस्त आपके आने वाले महीनों के बचत को
 प्रभावित कर सकती है।

किस्त लेन से पहले बचो या तलाशो संस्था से यह जरूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति को किस्त लेना है। यह एक निश्चित रूप में हो सकती है या खरीदारी की रकम के आधार पर तय हो सकती है। इस पर लागू कर की जानकारी भी लें। कुछ बैंकों की 2026 की शर्तों में किस्त सुविधा पर न्यूनतम रकम या लेनदेन के प्रतिशत के आधार पर प्रस्तावण शुल्क निर्धारित है। इसलिफ हर 'नो-कोस्ट' प्रस्ताव की वास्तविक लागत अलग हो सकती है।

लुआहारी ऑफर का फायदा उठाना गलत नहीं है। लेकिन बचट का मतलब बचत तभी है जब खरीदारी आपके बजट के भीतर हो। खरीदारी का रकम पहले से तय करें और उसी सीमा में सामान खरीदें। अगर कोई सामान जरूरत का है और उस पर वस्तुविक बजट मिल रहा है, किस्त की कुल लागत स्पष्ट है और मासिक भुगतान आसानी से किया जा सकता है तो प्रस्ताव पर विचार किया जा सकता है। केवल 'आज का ऑफर' 'सीमित समय की छूट' या 'बिना हवाज की किस्त' देखकर ज्यादा खर्च करना आर्थिक ह्रास बढ़ाता है।

- पहला, सामान की नकद कीमत और किस्त में कुल भुगतान कितना है।
- दूसरा, तत्काल छूट छोड़ने पर आपको कितना नुकसान हो रहा है।
- तीसरा, प्रसंस्करण शुल्क और उस पर लगने वाले कर कितने हैं।
- चौथा, समय से पहले किस्त बंद करने पर कोई शुल्क लगेगा या नहीं।
- पांचवां, देर से भुगतान की स्थिति में कितना अतिरिक्त खर्च हो सकता है।

नो-कास्ट ईएमआई खराब विकल्प नहीं है, लेकिन इसे तभी चुनना समझदारी है जब सामान की जरूरत हो, कुल लागत स्पष्ट हो और किस्त आपकी आर्थिक क्षमता के भीतर हो। आसान किस्त देखकर नहीं, पूरी कीमत देखकर फैसला करें।

खबर संक्षेप

गोवंश के जानलेवा हमलों पर जताई चिंता

धारूहेड़ा। शहीद भगत सिंह यादगार कमेटी ने शहर में गोवंश के लगातार बढ़ रहे जानलेवा हमलों पर गहरी चिंता प्रकट की है। कमेटी ने प्रदेश के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर मामले में कड़े कदम उठाने और लापरवाह अधिकारियों की जवाबदेही तय करने की मांग की है। कमेटी के अध्यक्ष सोशल एन्क्टिविस्ट कामरेड रमेश चंद्र व सचिव राकेश सैनी ने कहा कि गत दिवस पुरानी सब्जी मंडी में धनोरा निवासी अजीत सिंह गाय के हमले में गंभीर रूप से घायल हो गए। हर रोज ऐसी घटनाएं हो रही है। दो सप्ताह पहले दो बुजुर्गों की जान चली गई, लेकिन प्रशासन कागजी बहीखातों में उलझा हुआ है।

गाड़ी से टक्कर मारने के बाद पिस्टल प्वाइंट पर युवक से की थी मारपीट

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

अमर चौटाला कल महेंद्रगढ़ में देंगे न्यूता

नारनौल। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व नेता प्रतिपक्ष चौधरी अभय सिंह चौटाला 31 अगस्त को जिले के दौरे पर पहुंचेंगे। अपने दौरे के दौरान वे जिले में तीन अलग-अलग कार्यक्रमों को संबोधित करेंगे और कार्यकर्ताओं व जननायक चौधरी देवीलाल के अनुयायियों को जननायक चौधरी देवीलाल पर 113वीं जयंती के अवसर पर 27 सितंबर को नूंह में आयोजित होने वाली सम्मान दिवस रैली में पहुंचने का निमंत्रण देंगे।



रेवाड़ी। गिरफ्तार किए गए आरोपियों की परेड निकालते हुए पुलिसकर्मी।

अस्पताल में उपचाराधीन न्यू आदर्श नगर निवासी मनीष ने पुलिस शिकायत में बताया कि 28 अगस्त की रात समय लगभग 11 बजे वह भाड़ावास चौक से अपने घर के लिए एक अज्ञात व्यक्ति की बाइक पर बैठकर जा रहा था। जब वह आत्मप्रकाश अस्पताल के पास पहुंचे, तो पीछे से आई एक कार का रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी ने उनकी बाइक को सीधी टक्कर मार दी। इससे वह बाइक से सड़क पर

गिर गए। स्कॉर्पियो गाड़ी से विक्रम भान, राहुल, दीपांशु उर्फ मैसी, आदित्य उर्फ माया, कुणाल तथा उनके 2-3 अन्य साथी हाथों में पिस्टल, लोहे की रॉड और डंडे लेकर नीचे उतरे। आरोपी विक्रम भान ने उसकी कनपटी पर पिस्टल तानकर जान से मारने की धमकी दी। अन्य आरोपियों ने लोहे की रॉड और डंडों से उसके पैरों, हाथों और शरीर पर बेरहमी से हमला कर दिया। इसी दौरान वहां से गुजर

रिमांड पर लिए जाएंगे सभी आरोपी
एसपी के अनुसार आरोपियों से गहनता से पूछताछ की जा रही है तथा वारदात में इस्तेमाल की गई स्कॉर्पियो गाड़ी, अवैध हथियार व अन्य सामग्री की बरामदगी के लिए आगामी कानूनी प्रक्रिया अमल में लाई जा रही है। आरोपियों को रविवार को अदालत में पेश किया जाएगा।

इन आरोपियों को किया गिरफ्तार
गिरफ्तार किए गए में विक्रम भान निवासी मोहल्ला गुजरवाड़ा, हैप्पी निवासी मोहल्ला विकास नगर, दीपांशु उर्फ मैसी निवासी मोहल्ला शक्ति नगर, विपिन निवासी गांव रोहड़ाई, राहुल, आदित्य उर्फ माया व कुणाल निवासी गांव गोकुलवाढ़ शामिल हैं। इनमें से कई आरोपियों पर पहले भी केस दर्ज हैं।

तमाशा देखने उमड़ी लोगों की भीड़
सीआईएफ ने सभी आरोपियों की बाजार से शिनाख्त परेड कराई, तो तमाशा देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। आरोपियों को अखरोट चौक के पास से भाड़ावास रोड पर उस स्थान तक ले जाया गया, जहां रात को उन्होंने वारदात को अंजाम दिया था। इस दौरान आरोपी लंगड़ाकर चलते नजर आ रहे थे।

रही पुलिस की गश्त बाइक को देखकर सभी आरोपी जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए। पीड़ित ने बताया कि

आरोपियों की उसके छोटे भाई के साथ पुरानी कहासुनी हुई थी, इसी रंजिश के चलते इस वारदात को अंजाम दिया गया।

गवर्नमेंट कॉलेज नाहड़ में साइबर सुरक्षा से बचाव पर दी जानकारी

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ कोसली

राजकीय महाविद्यालय नाहड़ की प्रिंसिपल डा. सुषमा यादव की अध्यक्षता व लीगल लिटरेसी सेल की कन्वीनर डा. अनीता देवी की ओर से सशक्त भारत सशक्त युवा जागृति-स्कीम 2025 के तहत गोद लिए गए गांव नाहड़ में साइबर सुरक्षा एवं ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव विषय पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य ग्रामीणों एवं युवाओं को बढ़ते साइबर अपराधों तथा ऑनलाइन धोखाधड़ी के प्रति जागरूक करना और उन्हें सुरक्षित डिजिटल व्यवहार के लिए प्रेरित करना रहा। कार्यक्रम में अधिवक्ता परिषद की महिला प्रमुख एडवोकेट ममता यादव तथा साइबर पुलिस स्टेशन से एसआई प्रिंस सोनी ने बतौर विशेषज्ञ वक्ता सहभागिता



रेवाड़ी। कार्यक्रम में जानकारी देते हुए वक्ता।

फोटो : हरिभूमि

की। उन्होंने साइबर अपराधों के विभिन्न रूपों ऑनलाइन ठगी, फर्जी कॉल एवं संदेश, डिजिटल धोखाधड़ी तथा व्यक्तिगत जानकारी के दुरुपयोग से बचाव के उपायों की जानकारी दी। उन्होंने लोगों को साइबर अपराध की स्थिति में सतर्क रहने तथा किसी भी संदिग्ध गतिविधि की सूचना संबंधित विभाग को देने के लिए प्रेरित किया। वक्ताओं ने हेल्पलाइन

नंबर 1930 व लीगल सर्विस अथॉरिटी हेल्पलाइन नंबर 15100 की भी जानकारी दी। कार्यक्रम में डा. मोनिका यादव की सक्रिय सहभागिता रही। डा. प्रियंका यादव ने मंच संचालन किया। कार्यक्रम में ग्रामीणों और युवाओं को सुरक्षित डिजिटल व्यवहार अपनाने, अपनी व्यक्तिगत जानकारी को गोपनीय रखने तथा साइबर अपराधों के प्रति सजग रहने का संदेश दिया गया।

चार लाख वार्षिक आय वाले मेधावियों को मिलेगा लाभ

आंबेडकर मेधावी संशोधित योजना के लिए 30 नवंबर तक करें आवेदन



रेवाड़ी। डा. भीमराव अंबेडकर मेधावी छात्र संशोधित योजना के तहत पात्र विद्यार्थियों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। योजना के अंतर्गत आवेदन प्रक्रिया 30 नवंबर तक चलेगी। इस योजना का लाभ अनुसूचित जाति, विमुक्त जाति, डीएनटी-एसएनटी टपरीवास, पिछड़ा वर्ग (ए एवं बी) तथा अन्य समुदायों के उन मेधावी विद्यार्थियों को दिया जाएगा, जिनके परिवार की वार्षिक आय चार लाख रुपये से कम है। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि पात्र विद्यार्थी योजना के लिए अपना ऑनलाइन आवेदन नजदीकी सीएससी अथवा सरल केंद्र के माध्यम से कर सकते हैं। ऑनलाइन आवेदन के लिए सरल हरियाणा पोर्टल का भी उपयोग किया जा सकता है। उन्होंने विद्यार्थियों से अपील करते हुए कहा कि आवेदन करते समय सभी आवश्यक दस्तावेज सही एवं स्पष्ट रूप से अपलोड करें। अधूरे आवेदन पर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। पोर्टल पर केवल मूल एवं स्व-अभिप्रमाणित दस्तावेजों की स्कैन कॉपी ही अपलोड की जाए। इस योजना का लाभ निर्धारित पात्रता एवं प्रतिशतता पूरी करने वाले विद्यार्थियों को प्रदान किया जाएगा। अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों के लिए मेट्रिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में न्यूनतम 60 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 70 प्रतिशत, बारहवीं कक्षा पर ग्रामीण क्षेत्र में 70 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 75 प्रतिशत और बेजुपेशन स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में 60 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 65 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं। इसी प्रकार पिछड़ा वर्ग ब्लॉक-ए के विद्यार्थियों के लिए मेट्रिक में ग्रामीण क्षेत्र में 60 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 70 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं। पिछड़ा वर्ग ब्लॉक-बी एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के लिए मेट्रिक में ग्रामीण क्षेत्र में 75 प्रतिशत तथा शहरी क्षेत्र में 80 प्रतिशत अंक निर्धारित हैं। योजना का लाभ लेने के लिए विद्यार्थी का हरियाणा का निवासी होना अनिवार्य है।

■ डिजिटल अरेस्ट के नाम पर ठगी से रहें सावधान, धमकी भरे कॉल से न घबराएं : एसपी

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा ने आमजन को ‘डिजिटल अरेस्ट’ के नाम पर की जा रही साइबर ठगी से सावधान रहने के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि पुलिस, सीबीआई, ईडी, कस्टम विभाग अथवा अन्य सरकारी एजेंसी का अधिकारी बनकर फोन या वीडियो कॉल के माध्यम से डराने वाले साइबर अपराधियों के झांसे में न आएँ और किसी भी धमकी भरे कॉल से घबराने की बजाय उसकी सत्यता की पुष्टि करें। एसपी ने बताया कि साइबर ठग अक्सर लोगों को फोन कर यह कहते हैं कि उनका

गोपनीय जानकारी साझा न करें



एसपी मीणा ने कहा कि इस प्रकार का सखिद्व कॉल आगे पर घबराएं नहीं, बल्कि तुरंत कॉल समाप्त कर दें। किसी भी अनजान व्यक्ति के साथ ओटीपी, एटीएम पिन, बैंक खाते की जानकारी, पासवर्ड अथवा अन्य गोपनीय जानकारी साझा न करें। इसके अलावा किसी के कहने पर स्क्रीन शेयरिंग या रिमोट एक्सेस ऐप डाउनलोड करने से भी बचें। उन्होंने कहा कि साइबर अपराधी लोगों में डर, दबाव और जल्दबाजी का माहौल बनाकर ठगी को अंजाम देते हैं। इसलिए किसी भी सखिद्व कॉल पर तुरंत विश्वास न करें और संबंधित पुलिस थाना अथवा आधिकारिक माध्यम से जानकारी की पुष्टि अवश्य करें। एसपी ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति के साथ साइबर ठगी हो जाती है तो बिना देरी किए राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क करें तथा साइबरकाइम.जी.ओ.वी.इन पर शिकायत दर्ज कराएं।

आधार कार्ड, मोबाइल नंबर, बैंक खाता अथवा कोई पार्सल आपराधिक गतिविधि में इस्तेमाल हुआ है। इसके बाद वे गिरफ्तारी, मुकदमा दर्ज करने अथवा संपत्ति खूब करने का डर दिखाकर पीड़ित को वीडियो कॉल पर बनाए रखते हैं।

दावे व आपत्तियां दर्ज कराने की अवधि 30 सितंबर तक बढ़ी

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग ने हरियाणा में 1 जुलाई 2026 को अर्हता तिथि मानते हुए मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण की संशोधित समय-सारिणी जारी की है। आयोग की ओर से एसआईआर की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के लिए नई तिथियां निर्धारित की गई हैं। डीसी अभिषेक मीणा ने बताया कि बताया कि अब आयोग की ओर से दावे एवं आपत्तियां दायित्व करने की अवधि 30 अगस्त से बढ़ाकर 30 सितंबर कर दी गई है। इस अवधि के दौरान पात्र नागरिक मतदाता सूची में

अपना नाम शामिल कराने तथा मतदाता सूची से संबंधित दावे एवं आपत्तियां प्रस्तुत कर सकेंगे। इसी प्रकार नोटिस चरण तथा दावों एवं आपत्तियों के निपटारे की प्रक्रिया भी 28 अक्टूबर तक चलेगी। इसके उपरांत अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन 6 नवंबर को किया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने जिले के पात्र नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि वे निर्धारित अवधि के दौरान मतदाता सूची की जांच करें तथा आवश्यक होने पर दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराएं। उन्होंने अधिकारियों को भी निर्देश दिए कि आयोग की ओर से जारी संशोधित कार्यक्रम के अनुसार प्रक्रिया को निर्धारित समय-सीमा में पूरा करें।

टीपी स्कीम में दिनदहाड़े चोरी कैश व आभूषण पर लेकर फरार



रेवाड़ी। शहर की टीपी स्कीम कॉलोनी में चोरों ने दिनदहाड़े एक कारोबारी के घर में नकदी व आभूषण पर हाथ साफ कर दिया। चोरी की वारदात को अंजाम उस समय दिया गया, जब परिवार के सदस्य बेडरूम में चाय पी रहे थे। चोर हॉल में घुसकर नकदी, आभूषण व मोबाइल चुराकर ले गया। चोरी की पूरी वारदात सीसीटीवी कैमरे ने कैद हो गई। सीसीटीवी की फुटेज में चोर गुंड पर कपड़ा बांधकर मकान के सामने बाइक खड़ी करके अंदर घुसा है और चंद सैकड़ में बैग में नकदी व आभूषण लेकर फरार हो जाता है। शहर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर कारवाई कर दी है। टीपी स्कीम-9 निवासी दिनेश मदान ने गोकुल गेट चौकी पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 25 अगस्त को उनका पूरा परिवार घर पर था। परिवार के सदस्य बेडरूम में बैठकर चाय पी रहे थे। मकान का मेन गेट खुला हुआ था। चोर हॉल में रखे बैग से करीब 6 हजार रुपये, एक सोने की अंगूठी और पैन व आधार कार्ड सहित अन्य सामान चोरी कर ले गया।



ग्लेशियर के तेजी से पिघलने के कारण प्राकृतिक आपदाओं का निरंतर बढ़ रहा खतरा: प्रो. सोनी

रेवाड़ी। हमारा परिवार संस्था के तत्त्वाधान में शनिवार को बावल चौक स्थित मार्गव कान्फ्लेक्स में पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम धरती का बढ़ रहा तापमान- खतरों में है खब की जान का आयोजन किया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि शिक्षाविद प्रोफेसर सी एल सोनी व संस्था के संयोजक दिनेश कपूर ने कहा कि हाल ही में नेपाल में हुई ग्लेशियर त्रासदी में बड़ी संख्या में लोग अकाल मृत्यु का शिकार हुए व हजारों की संख्या में अमी लापता है। बहुत बड़ा क्षेत्र पल भर में मलबे के ढेर में बदल गया है। अमी भी हिमालय से बाद का खतरा बना हुआ है। इन सब का मुख्य कारण धरती पर बढ़ता हुआ तापमान है। धर्माचार्य संपर्क टोनी-विश्व हिंदू परिषद के नरेंद्र जोशी व आचार्य दिलीप शास्त्री ने कहा कि ग्लेशियर वॉर्मिंग से बचने के लिए आवश्यक है कि कम ऊर्जा खपत वाले उपकरणों का उपयोग करें व अधिक से अधिक पौधे लगाएं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय व्यापार सेवा संघ के जिला प्रधान दीपेश मार्गव ने कहा कि पेट्रोल डीजल से चलने वाले वाहनों की अपेक्षा इलेक्ट्रिक व सौरजोड़ी वाहनों का उपयोग करें। कार्यक्रम में संस्था की महिला संयोजक सरोज माझराज, उपप्रधान हेमंत गोवर्ध, कुलदीप सोनी, समाजसेवी मनोज गुप्ता, सुदर्शन मेहंदीरला, सत्यवत शास्त्री, सतीश माझराज व डा. देवेन्द्र मेजुड़ थे।

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ रेवाड़ी

नई अनाजमंडी में खरीफ की फसल बाजरे की आवक शुरू हो गई है। अभी बाजरे में नमी ज्यादा व क्वालिटी भी ठीक नहीं आ रही है, लेकिन फिर भी किसानों को खुली बोली में 2200 से 2300 रुपये प्रति क्विंटल के दाम मिल रहे हैं। नए बाजरे के साथ किसान गत वर्ष का पुराना बाजरा भी मंडी में बेचने के लिए लाने लगे हैं। पुराने बाजरे के किसानों को 1900 से 2100 प्रति क्विंटल के दाम मिल रहे हैं। जिले के कई गांवों में किसान खेतों में बाजरा व कपास की लावणी करने में जुट गए हैं। खरीफ की फसलों की



रेवाड़ी। अनाजमंडी के फड़ पर सुखता नया बाजरा।

फोटो : हरिभूमि

आवक के शुरू होने पर मार्केट कमेटी की ओर से किसानों की सुविधा के प्रबंध करने शुरू कर दिए गए हैं। जिले में इस वर्ष 75 से 80 हजार हेक्टेयर में बाजरा व करीब 8000 हेक्टेयर में कपास बोया गया था। आगामी दिनों में अनाजमंडी में खरीफ की फसलों की अच्छी

आवक आने की उम्मीद लगाई जा रही है। गत वर्ष 2025 में रेवाड़ी अनाजमंडी में करीब 7 लाख मीट्रिक के करीब बाजरा खरीदा गया था। वहीं, जिले की कोसली अनाजमंडी में आज 3 लाख क्विंटल के करीब बाजरे की आवक हुई थी।

बैठक

युवा महोत्सवों में छात्रों के प्रोत्साहन के लिए कई जरूरी निर्णय लिए

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶ मीरपुर

इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. असीम मिमलानी की अध्यक्षता में युवा कल्याण समिति की 9वीं बैठक आयोजित की गई। इस मौके पर कुलपति प्रो. मिमलानी ने विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की ओर से विभिन्न युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में हासिल की गई उपलब्धियों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं संबंधित अधिकारियों को बधाई दी। कुलपति ने कहा कि गत वर्ष विद्यार्थियों ने अब तक का

आईजीयू में युवा कल्याण समिति की 9वीं बैठक आयोजित, युवा महोत्सव पर हुई चर्चा

‘रील मेकिंग’ व ‘सोलो सिंगिंग’ की एंट्री, स्टैंड-अप कॉमेडी व ग्रुप साँग हरियाणवी को हटाने का निर्णय



रेवाड़ी। आईजीयू में स्टाफ की बैठक लेते हुए कुलपति।

फोटो : हरिभूमि

सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए कुल 7 पदक हासिल किए, जिनमें राष्ट्रीय युवा महोत्सव के 2 कांस्य पदक तथा सांस्कृतिक शोभायात्रा को

पुरस्कार शामिल है। उन्होंने विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी प्रकार उत्कृष्ट प्रदर्शन जारी रखने के लिए प्रेरित किया। कुलसचिव प्रो.

दिलबाग सिंह ने सभी सदस्यों का स्वागत किया। बैठक में अधिष्ठाता विद्यार्थी कल्याण प्रो. करण सिंह उपस्थित रहे।

ये रहे मौजूद

बैठक में प्रो. तेज सिंह, चीफ वार्डन प्रो. सतीश, प्रो. रोमिका बत्रा सुखीजा, डा. यशपाल सिंह, डा. कविता प्राचार्य, कैप्टलपी कॉलेज, डा. रेनु यादव, डा. नवीन अदलतखा प्राचार्य यदुवंशी डिग्री कॉलेज, राजेंद्र सिंह डीन आरपीएस कॉलेज, प्रो. नरेश यादव, डा. लाजवंती प्राचार्य जीसी कोसली, डा. राजेश बंसल, सहयक निदेशक डा. सुशान्त यादव तथा विद्यार्थी सदस्य उमेश व शशि उपस्थित रहे।

युवा महोत्सव का आयोजन व बढ़ावा

कुलपति ने कहा कि जोनल युवा महोत्सव का आयोजन अक्टूबर माह के अंत में तथा इंटर-जोनल युवा महोत्सव नवंबर माह के मध्य में आयोजित किया जाएगा, जिसके लिए महाविद्यालयों से प्रस्ताव आमंत्रित किए जाएंगे। इस वर्ष विद्यार्थियों की बदलती रुचियों को ध्यान में रखते हुए ‘रील मेकिंग’ एवं ‘सोलो सिंगिंग’ को नए आयोजनों के रूप में शामिल किया गया है, जबकि स्टैंड-अप कॉमेडी एवं ग्रुप साँग हरियाणवी को हटाने का निर्णय लिया गया है।

उत्तर-पश्चिम रेलवे से थर्ड एसी, द्वितीय शयनयान व साधारण श्रेणी के डिब्बों की बढ़ोतरी त्योहारों पर यात्रियों को राहत: सितंबर में 17 जोड़ी ट्रेनों में 63 अतिरिक्त डिब्बों की मिलेगी सुविधा



रेवाड़ी। रेवाड़ी रेलमार्ग से गुजरते हुए एक्सप्रेस ट्रेन।

फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज़►►रेवाड़ी

रेलवे की ओर से त्योहारों को लेकर सितम्बर माह में अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा के लिए रेलसेवाओं में अतिरिक्त डिब्बों की बढ़ोतरी की जा रही है। रेलवे की ओर से उत्तर-पश्चिम रेलमार्ग पर रेवाड़ी से होकर

गुजरने वाली करीब 17 जोड़ी ट्रेनों में विभिन्न श्रेणी के 63 डिब्बे बढ़ाए जा रहे हैं।

उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसम्पर्क अधिकारी अमित सुदर्शन ने बताया कि इन ट्रेनों में एक सितंबर से 30 सितंबर तक अतिरिक्त कोच बढ़ाकर यात्रियों को सुविधा दी जा रही है।

इन ट्रेनों में साधारण श्रेणी के डिब्बों की बढ़ोतरी

गाड़ी संख्या 19617/19618 मदार-रेवाड़ी-मदार रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। गाड़ी संख्या 19620/19619 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 59632/59631 रेवाड़ी-हिसार-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 59633/59634 रेवाड़ी-रीगस-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 19622/19621 रेवाड़ी-फुलेरा-रेवाड़ी रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों तथा गाड़ी संख्या 59630/59629 फुलेरा-जयपुर-फुलेरा रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 5 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

दिल्ली सराय-जोधपुर रेल में बढ़ाए डिब्बे

गाड़ी संख्या 19613/19612 अजमेर-अमृतसर-अजमेर रेलसेवा में अजमेर से 2 सितंबर से 30 सितंबर तक तथा अमृतसर से 3 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। गाड़ी संख्या 20485/20486 जैसलमेर-साबरमती-जैसलमेर रेलसेवा में जैसलमेर से 1 सितंबर से 2 सितंबर तक एवं साबरमती से 3 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 2 थर्ड एसी व 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बे, गाड़ी संख्या 20492/20491 साबरमती-जैसलमेर-साबरमती रेलसेवा में साबरमती से 1 सितंबर से 30 सितंबर तक एवं जैसलमेर से 1 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 2 थर्ड एसी व 1 द्वितीय शयनयान श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14714/14713 दिल्ली सराय-सीकर-दिल्ली सराय रेलसेवा में 2 सितंबर से 2 अक्टूबर तक 1 थर्ड एसी, 1 द्वितीय शयनयान व 1 साधारण श्रेणी डिब्बों तथा गाड़ी संख्या 12463/12464 दिल्ली सराय-जोधपुर-दिल्ली सराय रेलसेवा में दिल्ली सराय से 2 सितंबर से 30 सितंबर तक एवं जोधपुर से 3 सितंबर से 1 अक्टूबर तक 1 थर्ड एसी, 1 द्वितीय शयनयान व 1 साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

30 सितंबर तक की अस्थायी बढ़ोतरी

गाड़ी संख्या 14705/14706 मिवाजी-देहरा का बालाजी-मिवाजी रेलसेवा में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक 3 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है। गाड़ी संख्या 14725/14726 मिवाजी-मथुरा-मिवाजी रेलसेवा में मिवाजी से 3 सितंबर से 2 अक्टूबर तक एवं मथुरा से 4 सितंबर से 3 अक्टूबर तक 3 द्वितीय साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14715/14716 हिसार-जयपुर-हिसार रेलसेवा में हिसार से 1 सितंबर से 30 सितंबर तक एवं जयपुर से 4 सितंबर से 3 अक्टूबर तक 4 साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 14734/14733 जयपुर-बठिंडा-जयपुर रेलसेवा में 1 अक्टूबर तक 4 साधारण श्रेणी डिब्बों, गाड़ी संख्या 54704/54703 जयपुर-बठिंडा-जयपुर रेलसेवा में जयपुर से 3 सितंबर से 2 अक्टूबर तक एवं बठिंडा से 4 सितंबर से 3 अक्टूबर तक 4 साधारण श्रेणी डिब्बों तथा गाड़ी संख्या 22491/22492 जोधपुर-दिल्ली-जोधपुर रेलसेवा में जोधपुर से 1 सितंबर से 8 सितंबर तक एवं दिल्ली से 2 सितंबर से 9 सितंबर तक 1 थर्ड एसी व 1 थर्ड एसी इकोनोमी श्रेणी डिब्बों की अस्थाई बढ़ोतरी की जा रही है।

‘नंद के घर आनंद भयो...’ की गूंज 4 सितंबर को श्रीकृष्ण जन्मोत्सव को लेकर सजने लगे मंदिर

हरिभूमि न्यूज़►►रेवाड़ी

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव जन्माष्टमी को लेकर शहर में धार्मिक उत्साह का माहौल बनने लगा है। 4 सितंबर को शहर के विभिन्न मंदिरों में जन्माष्टमी का पर्व श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। पर्व को लेकर मंदिर समितियों ने तैयारियां तेज कर दी हैं। मंदिरों को रंग-बिरंगी लाइटों और फूलों से सजाया जा रहा है, वहीं भगवान श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं पर आधारित आकर्षक झांकियों की तैयारी भी शुरू कर दी गई है। जन्माष्टमी पर शहर के मंदिरों में दिनभर धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। शाम होते ही मंदिरों में भजन-कीर्तन और श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित झांकियां श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

रात 12 बजे भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के समय शंखनाद और घंटियों के बीच जन्मोत्सव मनाया जाएगा। इसके बाद श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया जाएगा। सेक्टर-4 स्थित राधाकृष्ण मंदिर में जन्माष्टमी पर



रेवाड़ी। ठठरा चौक स्थित एक दुकान में सजे राधू-गोपाल।

विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। मंदिर परिसर को भव्य रूप से सजाने के साथ भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं की झांकियां तैयार की जा रही हैं। वहीं जैकबपुरा रामलीला मैदान में भजन संध्या का आयोजन किया जाएगा। शहर के दूसरे श्रीकृष्ण मंदिरों में भी तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। धार्मिक संस्था ब्रह्माकुमारीज की ओर से भी श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। जन्माष्टमी को लेकर के बाजार भी सजने लगे हैं। दुकानों पर लड्डू गोपाल की पोशाक, मुकुट, बांसुरी, झूल, श्रृंगार सामग्री और पूजन सामग्री की बिक्री शुरू हो गई है।

राष्ट्रीय खेल दिवस पर सौ मीटर दौड़ पुरुष वर्ग में रमनदीप व महिलाओं में गुंजन बनी विजेता

■ कृषि महाविद्यालय बावल में हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को किया याद
हरिभूमि न्यूज़►►बावल

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बलदेव राज काम्बोज के मार्गदर्शन में कृषि महाविद्यालय बावल में राष्ट्रीय खेल दिवस का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। यह कार्यक्रम हॉकी के जादूगर एवं महान भारतीय हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। कॉलेज के प्राचार्य डा. सत्यजीत ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय खेल दिवस के महत्व तथा मेजर ध्यानचंद के जीवन एवं



रेवाड़ी। विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए प्राचार्य व शिक्षक।

फोटो : हरिभूमि

खेल उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को खेलों में अनुशासन, मेहनत, टीम भावना और खेल भावना के साथ भाग लेने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर सह-सहायक छात्र कल्याण निदेशक डा. मुकेश कुमार व डा. बलबीर सिंह संयोजक कृषि

विज्ञान केंद्र बावल भी मौजूद थे। कार्यक्रम के दौरान योग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पुरुष एवं महिला वर्ग की 100 मीटर दौड़, महिला स्मून रेस, रस्साकशी पुरुष एवं महिला व पुरुष वर्ग की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

डीएवी पुलिस पब्लिक स्कूल में हुई अंतर-सदनीय खेल प्रतियोगिताएं

हरिभूमि न्यूज़►►रेवाड़ी

बास्केटबॉल व कबड्डी प्रतियोगिता में विश्वामित्र सदन बना विजेता

टीमवर्क एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को विकसित करने के उद्देश्य से अंतर-सदनीय बास्केटबॉल एवं कबड्डी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय खेल दिवस प्रत्येक वर्ष 29 अगस्त को महान हॉकी खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। मेजर ध्यानचंद को भारतीय खेल जगत में उनके अद्वितीय योगदान और उत्कृष्ट हॉकी कौशल के लिए सदैव स्मरण किया जाता

है। उनका जीवन विद्यार्थियों को निरंतर अभ्यास, अनुशासन, समर्पण और लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध रहने की प्रेरणा देता है। इसी भावना को आत्मसात करते हुए विद्यार्थियों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में पूरे उत्साह और जोश के साथ भाग लिया। रोमांचक मुकाबलों में खिलाड़ियों ने अपने शानदार प्रदर्शन से खेल प्रतिभा का परिचय दिया। बास्केटबॉल प्रतियोगिता में विश्वामित्र सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, जबकि ट्रॉण सदन ने द्वितीय स्थान हासिल किया। वहीं कबड्डी प्रतियोगिता में भी विश्वामित्र सदन ने प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा परशु सदन ने द्वितीय स्थान हासिल किया। प्रतियोगिताओं के दौरान विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट खेल कौशल के साथ-साथ अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व क्षमता और खेल भावना का परिचय दिया।

हरिभूमि न्यूज़►►रेवाड़ी

पुलिस टीम ने गांव तुर्कियावास व रामगढ़ में ग्रामीणों को किया जागरूक

समाज को नशा मुक्त करने के उद्देश्य से पुलिस की ओर से नशा मुक्त हरियाणा पखवाड़ा के तहत अभियान चलाया जा रहा है। अभियान का मुख्य उद्देश्य मादक पदार्थों के दुरुपयोग और उनकी अवैध तस्करी के प्रति समाज में जन-जागरूकता फैलाना है, साथ ही युवाओं को नशे की गिरफ्त में आने से रोककर एक स्वस्थ, सुरक्षित और जागरूक समाज का निर्माण करना है।

शनिवार को एसएसआई जितेन्द्र कुमार के नेतृत्व जिला पुलिस की नशा मुक्त टीम ने



रेवाड़ी। गांव में ग्रामीणों को नशे के खिलाफ जागरूक करती पुलिस टीम।

गांव तुर्कियावास व रामगढ़ का दौरा कर लोगों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे जागरूक किया। युवाओं को नशे से दूर रहने तथा शिक्षा व खेलों से जुड़ने के लिए प्रेरित किया गया तथा नशा न करने की शपथ भी दिलाई। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि नशा केवल एक व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार को बर्बाद करता है और उससे भी आगे जाकर यह पूरे समाज को बर्बाद करता है। समाज में कई तरह के अपराध तो केवल नशे के कारण

होते हैं। कुछ लोग लूट-मार जैसी वारदातों को केवल दसलिए अंजाम देते हैं ताकि वे नशीले पदार्थों की अपनी जरूरत पूरी कर सकें। देश का युवा वर्ग इस दलदल में और अधिक न फँसने पाए, इसके लिए सबसे जरूरी है युवाओं को नशे से दूर रखा जाए। उन्होंने कहा कि यदि कोई युवा किसी वजह से गलत संगत का शिकार होकर नशे का आदी हो गया है तो उसे नशा छोड़ने के लिए प्रेरित करें, जिला पुलिस भी इसमें पूरा सहयोग करेगी।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-4 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 0853076211, 8295738500, 8291554800

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुगम **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	छ. 1500/-
10X 8 सें.मी		छ. 2000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कॉर्ड रेंट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

प्रवेश आठ ट्रेडों में हैं 264 सीटें, अभी तक हुए कुल 95 दाखिले

आईटीआई में दाखिलों के प्रति नहीं रुझान, एक तिहाई सीटें ही भर पाईं, प्रवेश के लिए दो दिन बढ़ाए

■ एनसीवीटी प्रवेश के लिए आवेदन अब कल तक, सभी ट्रेडों में अभी तक बड़ी संख्या में सीटें खाली

हरिभूमि न्यूज़►►रेवाड़ी

महिला आईटीआई में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों का रुझान कम होता जा रहा है। यही कारण है कि प्रवेश प्रक्रिया की अंतिम तिथि निकलने के बाद भी महज एक तिहाई सीटों पर प्रवेश हुए हैं। शेष सीटों को भरने के लिए आवेदन का एक और मौका दिया गया है। प्रवेश प्रक्रिया को अब 31 अगस्त तक बढ़ाया गया है।

पटौदी रोड आईटीआई में कुल 8 ट्रेड हैं। इनमें सीटों की संख्या 264 है। अभी तक सभी ट्रेड में 165 सीटों को ही भरा जा सका है। 99 सीटें शनिवार तक खाली थीं। विभाग की ओर से खाली सीटों पर प्रवेश के लिए अंतिम तिथि दो दिन



रेवाड़ी। पटौदी रोड स्थित सरकारी आईटीआई।

फोटो : हरिभूमि

आईटीआई से रोजगार के ज्यादा अवसर

आईटीआई और पॉलीटेक्निक संस्थानों में रोजगार पर प्रशिक्षण दिया जाता है। कैपस में ही कंपनियां साक्षात्कार के बाद प्रशिक्षार्थियों का चयन करती हैं, जिससे युवाओं के लिए रोजगार के अवसर आसान हो जाते हैं। कुछ समय से इन संस्थानों में प्रवेश लेने वाले बच्चों का रुझान कम हो रहा है, जिससे खाली सीटों को भरना मुश्किल हो रहा है।

बढ़ाकर 31 अगस्त कर दी गई है। अवकाश के बावजूद खाली सीटों को भरने के लिए प्रवेश की प्रक्रिया जारी रखी गई है, ताकि अधिक से

अधिक विद्यार्थियों को इसका फायदा मिल सके। जानकार सूत्रों के अनुसार आईटीआई से लेकर पॉलीटेक्निक कॉलेजों तक में बड़ी

अवकाश के दिन भी बुलाया गया स्टाफ

उच्चाखतर सरकारी दफ्तरों में रक्षाबंधन के साथ ही शनिवार और रविवार पड़ने के कारण तीन दिन का अवकाश रखा गया था। इसके बावजूद एनसीवीटी एडमिशन के लिए शनिवार को ही स्टाफ सदस्यों को बुला लिया गया, ताकि प्रवेश प्रक्रिया को निर्बाध रूप से जारी रखा जा सके। रविवार को वॉकिंग-डे मानते हुए प्रवेश प्रक्रिया चालू रखी जाएगी।

संख्या में सीटें खाली पड़ी हैं। इन सीटों को निर्धारित अवधि में भर पाना विभाग के लिए चुनौती बना हुआ है।

आईटीआई में सीटों की स्थिति		
ट्रेड का नाम	कुल सीट	खाली सीट
सीओपीए	48	31
कॉम्पेटीलॉजी	48	40
डीएमसी	42	20
ड्रेस मैकिंग	40	20
एसओटी	20	15
सेवटेक	40	26
इलेक्ट्रिशियन	20	07
इलेक्ट्रिक मैकेनिक	24	10



कुश्ती दंगल में बराबरी पर रहे पहलवान आशीष दादरी और वजीर कालियावास

कोसली। नेहरुवाड़ गांव के बाबा काला मुंहवाला मंदिर प्रांगण में रक्षाबंधन के पखन पर्व पर आयोजित वार्षिक उत्सव का दौरा शाम समापन हो गया। सरपंच आशीष प्रजापति ने हवन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। श्रद्धालुओं ने बाबा के दरबार में मत्था टेक कर दर्शन किए और प्रसाद ग्रहण किया। इससे पूर्व रात्रि जागरण में संजय पटेल एंड पार्टी ने अपने भजनों एवं रागनियों के माध्यम से श्रोताओं को देर रात तक कार्यक्रम से बांधे रखा। शाम के समय हंसराज पीटीआई के मार्गदर्शन में कुश्ती दंगल का आयोजन किया गया, जिसमें फाइनल मुकाबले में आशीष दादरी व वजीर कालियावास के बीच बराबरी पर रही। कार्यक्रम के आयोजन के लिए मंदिर कमिटी ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर अनेक गार्मनी मौजूद थे।

यात्रियों की सुविधा के लिए चार ट्रेनों का सरसावा स्टेशन पर अस्थायी ठहराव

रेवाड़ी। रेलवे की ओर से सत्संग में यात्रियों की सुविधा के लिए 31 अगस्त से 2 सितंबर तक 4 रेलसेवाओं का सरसावा रेलवे स्टेशन पर अस्थाई ठहराव दिया जा रहा है। उत्तर पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी अमित सुदर्शन ने बताया कि गाड़ी संख्या 14662 जम्मूतवी-बाड़मेर एक्सप्रेस रेलसेवा 30 अगस्त से 1 सितंबर तक जम्मूतवी से प्रस्थान करके सरसावा स्टेशन पर सुबह 6:40 बजे आगमन एवं 6:41 बजे प्रस्थान करेगी। गाड़ी संख्या 14717 बीकानेर-हरिद्वार एक्सप्रेस रेलसेवा 31 अगस्त को बीकानेर से प्रस्थान करके सरसावा स्टेशन पर दोपहर 12:55 बजे आगमन एवं 12:56 बजे प्रस्थान करेगी। गाड़ी संख्या 14718 हरिद्वार-बीकानेर एक्सप्रेस रेलसेवा 1 सितंबर को हरिद्वार से प्रस्थान करके सरसावा स्टेशन पर शाम 6:35 बजे आगमन एवं 6:36 बजे प्रस्थान करेगी। गाड़ी संख्या 14661 बाड़मेर-जम्मूतवी एक्सप्रेस 31 अगस्त से 2 सितंबर तक बाड़मेर से प्रस्थान करके सरसावा स्टेशन पर रात्रि 9:33 बजे आगमन एवं 9:34 बजे प्रस्थान करेगी।



गांव गोठडा अहीर के सैनिक स्कूल में धूमधाम से मनाया 19वां स्थापना दिवस

रेवाड़ी। गांव गोठडा अहीर स्थित सैनिक स्कूल में शनिवार को 19वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। प्राचार्य कैप्टन बिज किशोर ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उनके साथ विद्यालय एग्रेसनिक अधिकारी लैफ्टिनेंट कर्नल जयसिंह राठोड़ भी उपस्थित थे। वरिष्ठ अध्यापक गजेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत किया। प्राचार्य ने संस्था के सभी कैडेट्स, कर्मचारियों व अभिभावकों को स्कूल के स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का शुभारंभ करियप्पा सदन की ओर से प्रस्तुत विशेष प्रार्थना समा के साथ किया गया, जिसमें कैडेट्स ने विद्यालय गीत व प्रार्थना, सैन्य छात्र प्रवृत्ति, आज का विचार, आज का शब्द व प्रयोग, आज का इतिहास, दो समसामयिक विषयों पर भाषण, दो छात्रों का विषय पर संवाद, राष्ट्रीय गीत व राष्ट्रीय मान की प्रस्तुति दी। कैडेट सचिव ने स्थापना दिवस से अब तक की विकास यात्रा को प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि महोदय ने केक काटकर विद्यालय परिवार के साथ विद्यालय स्थापना दिवस मनाया। इस मौके पर विद्यालय अधिकारी, वरिष्ठ अध्यापक, सीमा पीजीटी केमिस्ट्री, विद्यालय कप्तान कैडेट अभिषेक, गर्ल कप्तान माधवी व कक्षा छह की नवागंतुक छात्रा कैडेट मोक्षिता सपरा उपस्थित रहें। इस अवसर पर प्राचार्य कैप्टन बिज किशोर ने सभी कर्मियों व कैडेट्स को पूरी निष्ठा व ईमानदारी से कर्तव्य निर्वहन करते हुए विद्यालय की गरिमा व अनुशासन संवर्धित करने का आह्वान किया।



राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए चयनित होने पर शिक्षक मुकेश को दी बधाई

रेवाड़ी। राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बीकानेर के अजेठी अध्यापक मुकेश कुमार के राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए चयनित होने पर विद्यालय स्टाफ ने उत्सामांसाओं से स्वागत किया। इस अवसर पर कार्यवाहक प्राचार्य पवन ने मुकेश कुमार को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनका राज्य शिक्षक पुरस्कार के लिए चयन होना विद्यालय परिवार के लिए गर्व का विषय है। यह उपलब्धि उनके उत्कृष्ट अध्यापन, कर्तव्यनिष्ठा, विद्यार्थियों के प्रति समर्पण एवं शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे निरंतर सराहनीय कार्यों का परिणाम है। उन्होंने कहा कि मुकेश कुमार को यह उपलब्धि विद्यालय के अन्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायी है। वरिष्ठ प्रवक्ता विजय सिंह ने कहा कि मुकेश कुमार ने अपने समर्पित कार्य, सकारात्मक सोच और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्धता से विद्यालय की गरिमा बढ़ाई है। मुकेश कुमार ने कार्यवाहक प्राचार्य, स्टाफ सचिव तथा समस्त विद्यालय स्टाफ का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान केवल उनके व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि विद्यालय परिवार के सहयोग, मार्गदर्शन, विश्वास और निरंतर प्रोत्साहन का परिणाम है। इस अवसर पर सेवानिवृत्त गणित अध्यापक बालकृष्ण यादव, स्टाफ सचिव प्रवक्ता सते सिंह, सोमबीर यादव, विक्टोरिया, डा. सुविधा यादव, रेखा रोहिल्ला, पूनम देवी, अध्यापक रविंद्र कुमार सैनी, हरिता शर्मा व राजेश कुमार उपस्थित रहे।



खेल शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक मजबूती का भी महत्वपूर्ण माध्यम: बीरसिंह

कोसली। भाकली गांव स्थित पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में मेजर ध्यानचंद की जयंती के अवसर पर राष्ट्रीय खेल दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के छात्र-छात्राओं और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय के प्राचार्य बीरसिंह ने विद्यार्थियों को खेलों के महत्व से अवगत कराते हुए किया। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन, टीम भावना और निरंतर प्रयास को जीवन में आगमने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि खेल शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक मजबूती का भी महत्वपूर्ण माध्यम है। शारीरिक शिक्षा शिक्षक महेंद्र सिंह के मार्गदर्शन में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं एवं टैक इवेंट्स का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी खेल प्रतिभा का प्रदर्शन किया। शिक्षकों ने भी खेल गतिविधियों में सहभागिता कर विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

विशेष: जन्माष्टमी, 4 सितंबर

हमारे आराध्य-पथप्रदर्शक पूर्णावतार श्रीकृष्ण

जन्माष्टमी केवल श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव नहीं, एक स्मरण है कि कान्हा की हर लीला, हर प्रसंग हमें आचरण के वो पाठ सिखाते हैं, जो आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उनके युग में थे। यही वजह है कि युगों बाद भी पूर्णावतार श्रीकृष्ण हमारे लिए आराध्य भगवान ही नहीं, शिक्षक की तरह जीवन के पथप्रदर्शक भी बने हुए हैं।

आवरण कथा

रामिनी रामपल्लीवार

भगवान श्रीकृष्ण को हम पूजते हैं, यह सत्य है। मंदिरों में उनकी प्रतिमा सजती है, जन्माष्टमी पर घर-घर दीप जलते हैं और भजनों में उनका नाम गूंजता है। पर यदि कृष्ण केवल पूजा तक सीमित रह जाएं, तो शायद हमने उन्हें आधा ही जाना। उनका अवतारी जीवन कोई कथा-मात्र नहीं, बल्कि ऐसा दर्पण है, जिसमें झाँककर हम अपने आचरण को तराश सकते हैं। वे केवल आराध्य नहीं, आचार्य सदृश पथप्रदर्शक भी हैं। आज की दुनिया में हमारे सामने कुरुक्षेत्र जैसा कोई युद्ध नहीं है, फिर भी हमारे भीतर न जाने कितने युद्ध चल रहे हैं। रिश्तों में अविश्वास है, सफलता की होड़ है, अकेलापन है, विफल होने का डर है और हर समय दूसरों से अपनी तुलना करते रहने की बेचैनी है। ऐसे समय में श्रीकृष्ण को केवल मंदिर में पूजने की नहीं, उनके गुणों को आत्मसात करने की भी जरूरत है।

सच्ची मित्रता की मिसाल: सुदामा और श्रीकृष्ण की मित्रता आज भी मित्रता का सबसे सुंदर उदाहरण है। एक ओर द्वारिकाधीश, दूसरी ओर अभाव में जीवन बिताता उनका बालसखा। जब सुदामा संकोच में लिपटे, साधारण वस्त्र पहने और मुड़ी भर चिवड़ा लेकर द्वारका पहुंचे, तो श्रीकृष्ण ने अपने मित्र को राजसी औपचारिकताओं के पीछे नहीं छिपने दिया। वे आगे बढ़े, उन्हें गले लगाया और उनके लिए छोट-से उपहार को उसी प्रेम से स्वीकार किया, जैसे वह कोई अनमोल भेंट हो। न वहां धन का भेद था, न पद का अहंकार। सच्ची मित्रता समय और परिस्थिति की मोहताज नहीं होती। वह यह नहीं पूछती कि आज तुम कितने सफल हो, बल्कि यह याद रखती है कि तुम कभी मेरे अपने थे। आज जब दोस्ती भी कई बार सुविधा, हैसियत और सामाजिक दायरे से तय होती है, श्रीकृष्ण का जीवन एक सवाल करता है कि क्या हमारे पास ऐसा मित्र है, जिसके सामने हमें अपनी सफलता साबित करने की जरूरत नहीं पड़ती? और क्या हम किसी के लिए ऐसे मित्र हैं?

मित्रता का दूसरा रूप भी: अर्जुन के साथ श्रीकृष्ण की मित्रता इसका दूसरा रूप दिखाती है। यहां वह मित्र भी हैं, सारथी भी और

मार्गदर्शक भी। कुरुक्षेत्र में अर्जुन मोह और दुविधा से घिर गए। श्रीकृष्ण ने उनकी जगह निर्णय नहीं लिया। उन्होंने उनके भीतर के भ्रम को समझा, प्रश्नों का उत्तर दिया और अंततः निर्णय लेने की शक्ति अर्जुन के भीतर ही जगाई। आज के जीवन में भी सच्चा मित्र वही है, जो केवल हमारी हानि में हानि न मिलाए। जब हम भ्रमित हों, तब सही बात कहने का साहस रखे और फिर निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी हमें दे।

स्त्री सम्मान के रक्षक: द्रौपदी के अपमान का प्रसंग महाभारत का सबसे पीड़ादायक प्रसंग है। भरी सभा में जब उसकी गरिमा पर आघात हुआ और वह असहाय होकर सहायता की पुकार करती रही, तब श्रीकृष्ण उसके भरोसे का केंद्र बने। पर इस प्रसंग की सबसे बड़ी सीख केवल चमत्कार में नहीं, उस प्रश्न में है जो हमसे पूछता है कि जब किसी स्त्री के सम्मान पर आंच आए, तब हम कहां खड़े होते हैं?

हम कहां खड़े होते हैं? श्रीकृष्ण का जीवन बताता है कि सामर्थ्य का अर्थ केवल स्वयं को सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि जरूरत के समय किसी दूसरे की गरिमा की रक्षा के लिए खड़ा होना भी है। आज स्त्री-सम्मान की बातें बहुत होती हैं। लेकिन सम्मान केवल अच्छे-बड़े शब्दों से नहीं आता। वह हमारे व्यवहार, हमारी दृष्टि और उस समय लिए गए निर्णयों में दिखाई देता है, जब किसी के साथ अन्याय हो रहा हो। श्रीकृष्ण का यह रूप हमें संवेदनशील होने के साथ साहसी होना भी सिखाता है।

समर्थ होकर भी विनम्र: श्रीकृष्ण के पास अपार सामर्थ्य था, फिर भी उन्होंने महाभारत के युद्ध में शस्त्र न उठाने का निर्णय लिया और अर्जुन के सारथी बने। एक योद्धा का सारथी बनना किसी शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि विनम्रता का अहंकार से ऊपर रखने का उदाहरण था। आज की दुनिया में सफलता के साथ अहंकार बहुत आसानी से चला आता है। पद बदलता है तो व्यवहार बदल जाता है, कमाई बढ़ती है तो पुराने रिश्ते छोटे लगने लगते हैं। श्रीकृष्ण इसके ठीक उलट खड़े दिखाई देते हैं। वे सिखाते हैं कि ऊँचाई का असली अर्थ ऊपर उठना नहीं, ऊपर उठकर भी सहज बने रहना है।

हर परिस्थिति में संतुलन: श्रीकृष्ण का जीवन संघर्षों से भरा था। जन्म कारागार में हुआ, बाल्यकाल में अनेक संकट आए, मथुरा छोड़कर द्वारका बसानी पड़ी और अंततः अपने ही वंश के

विशेष: शिक्षक दिवस, 5 सितंबर

भले ही आज दुनिया भर के हर विषय की जानकारी गूगल और एआई के जरिए एक क्लिक पर उपलब्ध है। लेकिन बेहतर मनुष्य बनने के लिए जरूरी सैद्धांतिक, नैतिक और व्यावहारिक ज्ञान शिक्षक ही हमें दे सकता है। तकनीकी क्रांति के दौर में भी शिक्षक की भूमिका कम नहीं हुई है।

गुरुकुल से गूगल-एआई तक बरकरार है शिक्षक की महत्ता

बदलाव / लोकमित्र गौतम

एक समय था, जब ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ किसी गुरु के सान्निध्य में बैठकर जीवन को समझना होता था। शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं होती थी बल्कि वह संस्कार, अनुशासन, विवेक और चरित्र निर्माण का माध्यम भी थी। भारतीय परंपरा में गुरु को ईश्वर से भी ऊंचा स्थान दिया गया है, क्योंकि वह अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक होता है। लेकिन ये सब पुरानी बातें हैं। आज 21वीं सदी में दुनिया बदल चुकी है। ज्ञान हमारी हथेली पर मौजूद है। मोबाइल फोन में समा गया है। गूगल के माध्यम से हम मिनटों में ही सैकड़ों सवालों के उत्तर दे सकते हैं और अब तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत दुनिया के जटिल से जटिल सवाल का भी सेकंडों में उत्तर प्रस्तुत कर सकते हैं। ऐसे में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या तकनीक के इस युग में गुरु यानी शिक्षक की भूमिका बदल गई है या फिर उसका महत्व पहले से अधिक बढ़ गया है?

ज्ञान कम-जानकारियां बेशुमार: वास्तव में आज तकनीक ने ज्ञान तक हमारी पहुंच बेहद आसान कर दी है। पहले किसी विषय को समझने के लिए पुस्तकालयों की धूलभरी अलमारियां खंगालनी पड़ती थीं। जबकि आज दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के दुर्लभ व्याख्यान, शोधपत्र और पाठ्यक्रम महज कुछ क्लिक की दूरी पर उपलब्ध हैं। आज हम किसी भी विषय पर वीडियो देख सकते हैं, चाहे छात्र हों या न हों। वास्तव में इस परिवर्तन ने शिक्षा को बेहद लोकतांत्रिक बनाया है। अब गुणवत्तापूर्ण जानकारी केवल बड़े शहरों या प्रतिष्ठित संस्थानों तक सीमित नहीं है। लेकिन एक महत्वपूर्ण अंतर भी पैदा हुआ है। आज जानकारी और ज्ञान एक-दूसरे के पर्याय नहीं रहे। जानकारीयां सिर्फ तथ्यों का संग्रह है, जबकि ज्ञान उन तथ्यों को सही संदर्भ में समझने और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने का माध्यम है। गूगल यह बताता है कि कोई निर्णय कैसे लिया जा सकता है? एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारे सामने किसी विषय का सार प्रस्तुत कर सकती है। लेकिन वह हमें जीवन के अनुभव, संवेदना और

मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकती। भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा: भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि शिक्षक केवल पाठ नहीं पढ़ाता बल्कि व्यक्तित्व का निर्माण भी करता है। महर्षि वेदव्यास, आचार्य चाणक्य, गुरु वशिष्ठ, गुरु द्रोणाचार्य से लेकर आधुनिक काल में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे अनेक शिक्षकों ने सिर्फ ज्ञान भर नहीं दिया बल्कि अपने शिष्यों में दृष्टि, आत्मविश्वास और उत्तरदायित्व का भाव भी विकसित किया है, जो किसी भी मशीन या सॉफ्टवेयर के बस में नहीं है। बदल गई शिक्षक की भूमिका: आज के समय में शिक्षक की भूमिका काफी हद तक बदल गई है, लेकिन समाप्त नहीं हुई। पहले शिक्षक ज्ञान का मुख्य स्रोत होता था, अब वह सिर्फ ज्ञान का मार्गदर्शक बनता जा रहा है। पहले छात्र उत्तर जानने के लिए शिक्षक पर निर्भर थे, आज यह काम तो इंटरनेट भी कर देता है। लेकिन सही उत्तर की पहचान करना, उसकी विश्वसनीयता को परखना, विभिन्न विचारों की तुलना करना और उनका विवेकपूर्ण उपयोग करना, अभी भी यह सब भूमिकाएं शिक्षक के पास ही हैं। आज शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पाठ्यक्रम पूरा करना नहीं है बल्कि विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने, तर्क करने और स्वतंत्र सोच विकसित करने की क्षमता भी पैदा करना है। और महत्वपूर्ण हो गई भूमिका: वास्तव में एआई या कोई भी तकनीक चाहे जितनी उन्नत हो, लेकिन है तो एक तकनीक ही। यह शिक्षक को स्थानापन्न नहीं कर पाएगी। एआई के बावजूद शिक्षक का काम रचनात्मक उपयोग, पहले से कहीं ज्यादा जरूरी बना रहेगा। एआई के बावजूद शिक्षक का काम शिक्षा को अधिक रोचक बनाना बना रहेगा और एआई के बावजूद शिक्षक व्यक्तिगत और प्रभावी बना रहेगा, यानी एआई हर किसी को एक जैसी सहूलियत नहीं दे सकता। जो एआई के उपयोग में माहिर नहीं है, उन्हें अभी-भी ज्ञान, जानकारीयां और विश्लेषण के लिए शिक्षक की तरफ ही देखना होगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर हमें यह भी समझना चाहिए कि गुरु का काम केवल सूचना देना भर नहीं होता। वह जीवन को दिशा देता है।

लघुकथाएं

जीवन सारथी

अपनी सहेली दिव्या से पायल ने दुविधा प्रकट करते हुए कहा, 'मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि मैं यह शादी करूं या नहीं?' 'क्यों क्या हुआ, अच्छे-खासे घर का बहिया कमाने वाला हैडसम बंदा है।' दिव्या ने समझाया। 'असल में जब से सगाई हुई है, तब से हम दोनों की नियमित बात होने लगी है।' 'हां तो यह तो और अच्छी बात है। मैरिज के पहले ही एक-दूसरे को समझने का मौका मिल रहा है।' दिव्या ने उसकी आशंका को कम करना चाहा। 'यहीं से तो मुश्किल शुरू हुई है।' बात-बात पर वह गुस्सा करने लगते हैं। मैं उनसे कहती कुछ हूं और वह उस बात का कुछ और (मनमाता) अर्थ निकालकर मुझ पर ऐसे दोष मढ़ते हैं कि मैं अपराधबोध से ग्रसित हो जाऊं। बात-बात पर मुझसे झूठ भी बोलते हैं। समझ नहीं आ रहा है कि इस रिश्ते के लिए न करूं तो कैसे? डर है इससे सब घर वाले नाराज हो जाएंगे।' पायल ने चिंतित होते हुए सारी बात बताई। 'पागल हो गई हो तुम। जब तुम्हारा भावी साथी अपने व्यवहार से रेंड सिमल दे रहा है, तब क्यों सबकी खुशी के लिए खुद को झोंक देने को तुली हुई हो? अगर तुमने अभी दृढ़ता से मनचाहा निर्णय नहीं लिया तो वह शख्स, ...

ओ हीरो !

राहुल की मोटरसाइकिल का टायर अचानक रास्ते में पंक्चर हो गया। वह पास की एक छोटी-सी ऑटो रियरिंग शॉप पर पहुंचा। वहां लगभग चालीस वर्ष का एक कारीगर बड़ी तमयता से अपना काम कर रहा था। बजते समय उसके एक पैर में हल्की-सी लचक साफ दिखाई दे रही थी। राहुल की आदत थी कि वह हर किसी को हंसते हुए 'क्या हाल हैं, हीरो!' या 'कैसे हो, हैडसम!' कहकर संबोधित करता था। जैसे ही उसने मुस्कराकर कहा, 'क्यों हीरो, मेरी बाइक का टायर ठीक कर दोगे?' इतना सुनना था कि कारीगर का चेहरा उतर गया। उसने धीमे स्वर में कहा, 'साहब, मजाक मत कीजिए ऊपर वाले ने तो मुझे हीरो बनने लायक छोड़ा ही कहा है?' राहुल उसकी पीड़ा समझ गया। उसने तुरंत गंभीर होकर कहा, 'भैया, मैं मजाक नहीं कर रहा। मेरे लिए हीरो वह होता है जो अपने हुनर और मेहनत ...

देश के कोने-कोने का भरोसा

2 करोड़+ खुश ग्राहक

आपके नजदीकी मोमी मेडिकल स्टोर पर उपलब्ध। Available at: www.mynushroomworld.com Amazon | Flipkart

वजन बढ़ाने में सहायक

मशरूम एवं 12+ जड़ी-बूटियां

10 दिनों में अस्तर देखें

क्योंकि वजन है, तो वजनवारी है!

Mushroom World Ayurved & Food Pvt. Ltd. For Trade Enquiry - +91 888 922 3333

पुस्तक रचा / विज्ञान भूषण

निष्करुण समय में

हम जिस समय-समाज में जी रहे हैं, वह एक बड़े वर्ग के लिए बहुत निर्मम और निष्करुण है। संतोष की बात है कि हाशिए पर निरंतर धकेले जा रहे ऐसे वर्ग की दबी-दबी ही सही कुछ आवाजें, कविताओं में यदा-कदा सुनाई पड़ जाती हैं। युवा कवि शंकरानंद के नए कविता संग्रह 'नाखून में फंसी मिट्टी' की कविताओं को भी इस नजरिए से देखा जा सकता है। इन कविताओं में जीवन की त्रासदियों को वे बहुत सशक्तता से व्यक्त करते हैं। मिसाल के तौर पर गांव से शहर में विस्थापन की बाध्यता के दर्द को 'मेरे साथ गांव/सिर्फ परिचय में कागज पर है/ बस उतनी ही है

मेरे पास जड़ें/जितनी पैरों के नाखून में फंसी मिट्टी।' (नाखून में फंसी मिट्टी) जैसी पंक्तियां में महसूस किया जा सकता है। किसानों की मनोव्यथा को इस पंक्ति में देखा जा सकता है, 'वह किसी मुलायम मिट्टी जितना भुरभुरा है/इस तरह कि बूने से टूट जाए' (इन दिनों किसान)। इसी तरह 'खी का दुख' कविता की ये पंक्तियां हमें खी जीवन की उस मार्मांत पीड़ा की अनुभूति कराती हैं, जिसे प्रायः पुरुषों के द्वारा उपेक्षित ही किया जाता रहा है, 'कुछ दुख होते ही हैं ऐसे/जिसे कहा नहीं जाता/जुबान लाचार हो जाती है।' संग्रह की अधिकांश कविताएं हमारे समय की कुरूप छवियों को पूरी संवेदना के साथ सामने रखती हैं।

किताब: नाखून में फंसी मिट्टी (कविता संग्रह), रचनाकार: शंकरानंद, मूल्य: 325 रुपए, प्रकाशक: सेतु प्रकाशन, नोएडा

जन्माष्टमी पर लोकआस्था ही नहीं भक्ति का केंद्र बन जाता है मथुरा



धार्मिक स्थल / वीणा गौतम

भाद्रपद या भादों का महीना आते ही देश के नक्शे पर एक शहर भक्ति और भावना का संगम, आस्था का केंद्र बन जाता है, यह शहर है- भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा। भादों महीने में, जो कल ही आरंभ हुआ है, मथुरा की गलियां अपने आपमें तीर्थ बन जाती हैं। हर गली में मौजूद अनेक मंदिरों वाला यह शहर एक विशाल पूजा स्थल में बदल जाता है।

पूरा शहर हो जाता है कृष्णमय: जन्माष्टमी के दिन तो मथुरा में पूरी रात देश के कोने-कोने से आए लाखों तीर्थयात्री भक्ति का जागरण करते हैं। सिर्फ जन्माष्टमी के दिन ही नहीं, पूरे भादों महीने में यहां देश ही नहीं बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों से आए तीर्थयात्रियों की उत्सवमयी मौजूदगी उल्लास गुंजता रहता है। हालांकि साल के बाकी दिनों में भी मथुरा में तीर्थयात्रियों की भरमार रहती है, लेकिन जन्माष्टमी की तो बात ही अलग होती है। इस दौरान तो जैसे पूरे महीने यह पूरा शहर कृष्णमय उत्सव का साक्षी बन जाता है।

पर्यटकों के ठहरने की पर्याप्त व्यवस्था: इस साल कृष्ण जन्माष्टमी 4 सितंबर 2026 को पड़ रही है और एक पखवाड़े पहले से ही तीर्थयात्रियों की ठहरने वाली सभी जगहें फुल हो चुकी हैं। लेकिन यह बात भी है कि इस शहर में तीर्थयात्रियों को ठहरने की कभी समस्या नहीं रहती, क्योंकि एक दशक पहले प्रचलित हुए, घर पर पर्यटकों को ठहराने की नीति के कारण मथुरा में बहुत सारे लोग इस मौके पर अपने घरों को तीर्थयात्रियों के लिए खोल देते हैं। इस तरह पर्यटकों को सुविधाजनक 'होम स्टे' का आनंद भी मिल जाता है। इसलिए उमड़ता है जन्मसैलाब: भादों के महीने में यहां

कंधे पर टंगा बैग अब सिर्फ किताबों/जरूरी सामानों का कैरियर नहीं रहा। अब बैगपैक भी यंगस्टर्स का स्टाइल स्टेटमेंट बन गए हैं। स्टाइल और कंफर्ट के कॉम्बो वाले ये बैगपैक्स आज के यंगस्टर्स को खूब भा रहे हैं।

यंगस्टर्स को भा रहे हैं बैगपैक के नए स्टाइल



न्यू ट्रेंड
संध्या सिंह

कॉलेज, कोचिंग, ऑफिस या छोटी-छोटी ट्रेवलिंग, आज के अधिकांश युवा बहुत मूवमेंट करते रहते हैं। ऐसे में बैगपैक अब सिर्फ किताबें ढोने वाला बैग नहीं रह गया, बल्कि युवाओं की रूटीन लाइफस्टाइल, जरूरतों और पर्सनैलिटी का अहम हिस्सा बन चुका है। समय के साथ बैगपैक का स्वरूप भी बदला है। अब युवा ऐसा बैगपैक चाहते हैं, जो स्टाइलिश दिखने के साथ-साथ लैपटॉप की सुरक्षा करे, मोबाइल चार्ज करने में मदद करे, बारिश से सामान को बचाए और भीड़-भाड़ में चोरी से भी सुरक्षित रहे। यही कारण है कि बाजार में 'स्मार्ट बैगपैक' की मांग लगातार बढ़ रही है।

जरूरतों के हिसाब से बदलता बैगपैक: एक समय था, जब बैगपैक का मतलब केवल दो बड़े कंपार्टमेंट और पट्टियां हुआ करता था। लेकिन इस डिजिटल युग में विद्यार्थियों की जरूरतें बदल गई हैं। अब कॉलेज जाने वाले अधिकांश युवाओं के बैग में किताबों के साथ-साथ लैपटॉप, टैबलेट, चार्जर, पावर बैंक, ईयर बड्स, पानी की बोतल और कई अन्य जरूरी सामान भी होता है। इन्हीं बदली जरूरतों को देखते हुए कंपनियां ऐसे

बैगपैक बना रही हैं, जो सुविधाओं से भरपूर और देखने में बेहद स्मार्ट हों।

मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन: आज के आधुनिक बैगपैक की सबसे बड़ी खासियत उसका मल्टी कंपार्टमेंट डिजाइन है। इसमें लैपटॉप के लिए अलग कुशनयुक्त हिस्सा, टैबलेट पॉकेट, चार्जर और केबल के लिए छोटे पॉकेट, पेन होल्डर और पानी की बोतल रखने के लिए अलग-अलग जगहें होती हैं। इससे सामान व्यवस्थित रहता है और जरूरत पड़ने पर तुरंत मिल जाता है।

वाटर रेजिस्टेंट फीचर: बारिश के मौसम को देखते हुए वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक वाले बैगपैक तेजी से लोकप्रिय हुए हैं। इसमें अचानक बारिश होने पर भी लैपटॉप, नोटबुक और दस्तावेज सुरक्षित रहते हैं। कुछ बैगों के साथ रेन कवर भी मिलता है, जिससे अतिरिक्त सुरक्षा मिल जाती है। जिन छात्रों को रोज लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, उनके लिए यह बेहद उपयोगी होता है।

एंटी-थेफ्ट फीचर: बैगपैक में अब एंटी-थेफ्ट फीचर भी जोड़े जा रहे हैं। छिपी हुई जिप, पीछे की ओर सीक्रेट पॉकेट, मजबूत लॉकिंग सिस्टम, यात्रा के दौरान चोरी या जोखिम को कम करते हैं। मेट्रो, बस और रेलवे स्टेशन जैसी भीड़भाड़ वाली जगहों पर यह सुविधा विशेष रूप से काम आती है।

चार्जिंग की सुविधा: टेक्नोलॉजी ने बैगपैक को और भी स्मार्ट बना दिया है। कई बैगों में यूएसबी चार्जिंग पोर्ट दिया होता है, इसमें अंदर पावर बैंक रखकर बाहर लगे पोर्ट से मोबाइल चार्ज किया जा सकता है। ऐसे में लगातार मोबाइल और इंटरनेट पर निर्भर युवाओं को बहुत सुविधा होती है। ये बेफिक्र होकर यात्रा कर सकते हैं।



स्मार्ट बैगपैक में हों ये फीचर्स: आपके बैगपैक में ये फीचर्स जरूर होने चाहिए, तभी वो स्मार्ट लगेंगे।

- इसमें लैपटॉप कंपार्टमेंट कुशनयुक्त और सही आकार का हो।
- वाटर रेजिस्टेंट फैब्रिक के साथ रेन कवर जरूरी है।
- एंटी-थेफ्ट पॉकेट और मजबूत जिप, सुरक्षा बढ़ाती है।
- गद्देदार शोल्डर स्ट्रैप और बैक सपोर्ट आरामदायक होने चाहिए।
- कम से कम 20 से 30 लीटर क्षमता वाला बैग कॉलेज छात्रों के लिए पर्याप्त रहता है।
- यूएसबी चार्जिंग पोर्ट जैसी सुविधा उपयोगी हो सकती है, लेकिन गुणवत्ता को प्राथमिकता दें। इस मामले में याद रखें कि खाली बैग का वजन जितना कम होगा, वह उतना ही बेहतर होगा।



जन्माष्टमी के पावन महीने भाद्रपद के आते ही मथुरा सिर्फ एक शहर नहीं रहता, बल्कि लोकआस्था का उल्लासमय केंद्र बन जाता है। कृष्ण जन्माष्टमी की आहट के साथ वहां की गलियां, मंदिर और घाट भक्ति के रंग में रंग उठते हैं। आधी रात जन्मोत्सव के उस अलौकिक क्षण का साक्षी बनने देश-दुनिया से लाखों श्रद्धालु यहां उमड़ते हैं। यहां की विलक्षण मय्यता-दिव्यता पर एक दृष्टि।



देवकी-वासुदेव को कारागार की सजा, आधी रात में श्रीकृष्ण का जन्म और फिर नवजात शिशु को लेकर वासुदेव का यमुना पार करके गोकुल पहुंचना... हजारों साल से यह कथा भारतीय जनमानस में इस कदर रची बसी है कि यहां आने वाला हर श्रद्धालु, हर जगह श्रीकृष्ण की मौजूदगी देखता है। यही कारण है कि मथुरा आने वाले तीर्थयात्री सिर्फ मंदिर का दर्शन नहीं करते। वे पूरी मथुरा नगरी में अपने होने की अनुभूति करते हैं। जहां-जहां कृष्ण की मौजूदगी के वृत्तांत मौजूद होते हैं, पहुंचकर भक्ति, भावना से हम सराबोर हो जाते हैं। जन्माष्टमी की आधी रात, जैसे ही 12 बजते हैं, मंदिरों में गुंजती

सिने ट्रेंड मनोज प्रकाश

अपने शुरुआती दौर से ही हिंदी फिल्मों से भक्ति गीत-संगीत का नाता रहा है। इनमें भी भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित या उनका बाल्य-किशोर लीलाओं के इर्द-गिर्द बड़ी संख्या में फिल्मी गीत रचे जाते रहे हैं और लोगों में भी इनके प्रति दीवानगी खूब देखने को मिलती है। बॉलीवुड में जब श्रीकृष्ण के विभिन्न नाम और उनकी लीलाओं पर आधारित गीतों का चलन आरंभ हुआ तो ये इतने लोकप्रिय हुए कि मंदिरों और पूजा-स्थलों में भी गाए-बजाए जाने लगे। बहुत लोकप्रिय हुए ये गीत: श्रीकृष्ण पर केंद्रित कई सुधमुर गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज में गाकर बहुत लोकप्रिय बना दिया। ये गीत श्रोताओं के मन को छूते हैं, आत्मा में उतरते हैं। इन गीतों को सुनकर अनायास ही मन में श्रीकृष्ण की मोहक छवियां उभरती हैं। सन 1972 में आई फिल्म 'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हैया, का करे यशोदा मैया' आनंद बख्शी की कलम से निकलकर हर उस मां के लिए लोरी गीत बन गया, जो गोद में लिए बालक में बाल कृष्ण का रूप देखती हैं। 1978 की फिल्म 'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यों गोरी मैं क्यों काला' में बाल कृष्ण की नटखट अदाएं इस तरह से समाहित हैं कि लगता है जैसे नंदलाला हमारे सामने ही मां को उलाहना दे रहे हैं। इसी तरह लता मंगेशकर का गाया फिल्म 'संतोष' (1989) का गीत 'बंसी वाले ने घेर लई, अकेली जो पनिया भरन मैं गई' बृज क्षेत्र के साथ ही पूरे देश में लोकगीत की तरह खूब लोकप्रिय हुआ। फिल्म 'शागिर्द' (1967) का 'कान्हा आन पड़ी मैं तेरे द्वार', 'जॉनी मेरा नाम' (1970) का 'मोसे मोरा श्याम रूठा... छुप छुप मीरा रोए, दर्द न जाने कोई' जैसे कृष्ण भक्ति के रंग में रंगे कई गीतों को लता मंगेशकर ने अपनी आवाज देकर अमर बना दिया। ये आज भी पूरे मन से सुने जाते हैं। **भक्ति-भाव से भरे कृष्ण गीत:** भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति पर केंद्रित कई हिंदी फिल्मी भजन भी खूब सुने सुनाए जाते हैं। वर्ष 1952 की फिल्म 'बैजू बावरा' में मोहम्मद रफी ने अपनी धीरे-गंभीर आवाज में कृष्ण को याद करते हुए 'मन तड़पत हरि दर्शन को आंज' गाया था। इसे सुनकर श्रोता आज भी संभुमध हो जाते हैं। 1957 में आई फिल्म 'मिस मेरी' का गीत 'वृंदावन का कृष्ण कन्हैया सबकी आंखों का तारा, मन ही मन क्यों जले राधिका मोहन तो है

श्रीकृष्ण का जीवन दर्शन किसी रुढ़िवादी परंपरा का नाम नहीं है, बल्कि जीवन जीने का एक व्यावहारिक और आधुनिक विज्ञान है। उनकी शिक्षाओं से जुड़ी ये बातें, आज के युवाओं को संतुलित, सफल और शांतिपूर्ण जीवन जीने की राह दिखाती है।



आज के युवा श्रीकृष्ण से सीखें सुकून भरी जिंदगी के सूत्र

जीवन प्रेरणा
शिखर चंद जैन

भगवान श्रीकृष्ण केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शक नहीं हैं, बल्कि वे एक कुशल मनोवैज्ञानिक, संकट प्रबंधक और लाइफ कोच भी हैं। आज की जेनरेशन यानी वह पीढ़ी जो इंटरनेट, सोशल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साए में बड़ी हो रही है, एक और अभूतपूर्व अवसरों से घिरी है, तो दूसरी ओर मानसिक तनाव, अकेलेपन, 'फोमो' (फियर ऑफ मिसिंग आउट) और बर्नआउट जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है। तेज रफ्तार और तुरंत परिणाम चाहने वाली इस दौर के युवाओं के लिए हजारों साल पहले कुरुक्षेत्र के मैदान में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया गीता का उपदेश आज और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है।

हसल कल्चर का हल: आज के युवा 'हसल कल्चर' (रिजल्ट एंजाइटी) यानी रात-दिन भागदौड़ में उलझे रहते हैं। वे रील्स पर व्यूज, परीक्षाओं में टॉप करने या करियर में तुरंत मोटी सैलरी पाने के दबाव में लगातार जोते हैं। श्रीकृष्ण का सबसे प्रसिद्ध उपदेश है, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचनः।' इसका अर्थ है कि तुम्हारा अधिकार केवल कर्म करने पर है, उसके फल पर नहीं। श्रीकृष्ण युवाओं को समझाते हैं कि जब हम परिणाम के बारे में बहुत अधिक सोचते हैं, तो हमारी पूरी ऊर्जा एंजाइटी में नष्ट हो जाती है और हम वर्तमान कार्य को पूरी निपुणता से नहीं कर पाते। युवाओं को परिणाम की चिंता छोड़कर अपनी पूरी ऊर्जा प्रोसेस पर लगानी चाहिए।

वैलिडेशन-ट्रोलिंग से निपटने का मंत्र: आज के युवाओं का एक बड़ा हिस्सा अपनी खुशी और आत्म-सम्मान को सोशल मीडिया के लाइक्स, कमेंट्स और फॉलोअर्स की संख्या से मापता है। इस वजह से वे जरा-सी आलोचना या 'ट्रोलिंग' से टूट जाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण 'स्थितप्रज्ञ' होने की बात करते हैं यानी ऐसा व्यक्ति, जो सुख और दुःख, मान और अपमान, प्रशंसा और निंदा में एक समान रहता है। युवाओं को यह

समझना होगा कि दूसरों के डिजिटल कमेंट्स या ओपिनियन उनके अस्तित्व को तय नहीं करते। **पीयर प्रेशर-आइडेंटिटी क्राइसिस का समाधान:** आज के दौर में 'ट्रेंड्स' के पीछे भागने की अंधी दौड़ है। युवाओं पर दोस्ती, परिवार और समाज की उम्मीदों का इतना दबाव होता है कि वे अपनी असली पहचान खो देते हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं 'श्रैयान्वधर्मा विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात।' अर्थात् दूसरों के रास्ते पर चलकर पूर्णता हासिल करने से कहीं बेहतर है कि आप अपने खुद के स्वभाव और क्षमताओं को पहचानें, भले ही उसमें शुरुआत में कुछ कमियां ही क्यों न हों। दूसरों की नकल करके डॉक्टर, इंजीनियर या इन्फ्लुएंसर बनने के बजाय युवाओं को अपनी प्रतिभा को पहचानना चाहिए और खुद के प्रति वफादार रहना चाहिए।

सिचुएशनशिप को संभालने का तरीका: आधुनिक समय में रिश्ते बहुत जल्दी बनते और बिगड़ते हैं। श्रीकृष्ण का जीवन और उनकी शिक्षाएं सिखाती हैं कि प्रेम में 'आसक्ति' यानी पंजसिक्नेस के बजाय 'अनासक्ति' और निःस्वार्थ भाव होना चाहिए। श्रीकृष्ण ने राधा से प्रेम किया, लेकिन वे

जीवन भर उनके साथ नहीं रहे, उन्होंने रक्मिणी से विवाह किया और अपने राजनीतिक व सामाजिक कर्तव्यों का भी पालन किया। वे सिखाते हैं कि किसी भी व्यक्ति या परिस्थिति पर इस कदर निर्भर मत हो जाओ कि उसके बदलने पर आपका जीवन ही ठहर जाए। जीवन में आगे बढ़ना ही सच्ची परिपक्वता है। **एंजाइटी पर नियंत्रण:** आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है ओवरथ्रिंकिंग यानी अत्यधिक सोचना। श्रीकृष्ण गीता के छठे अध्याय में कहते हैं, 'बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मेवात्मना जितः।' यानी जिस व्यक्ति ने अपने मन को जीत लिया है, उसका मन ही उसका सबसे अच्छा मित्र है। श्रीकृष्ण युवाओं को ध्यान, आत्म-नियंत्रण और सजगता के माध्यम से अपने भूतकेंद्रित हुए विचारों को नियंत्रित करने की सलाह देते हैं ताकि वे मानसिक शांति पा सकें। इस तरह श्रीकृष्ण युवाओं के सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक हैं।

जन्माष्टमी आते ही श्रीकृष्ण की लीलाओं और कृष्ण भक्ति से जुड़े गीत खूब सुनाई पड़ने लगते हैं। हिंदी सिनेमा में भी श्रीकृष्ण की लीलाओं पर आधारित ऐसे अनेक गीत रचे गए हैं, जो हर किसी की जुबान पर चढ़े हुए हैं। ऐसे ही कुछ लोकप्रिय गीतों पर एक नजर।

कृष्ण-कन्हैया के रंग में रंगो बॉलीवुड के लोकप्रिय गीत



'अमर प्रेम' का गीत 'बड़ा नटखट है रे'



'खुदा' का गीत 'मव गया शोर सारी नगरी रे'



'ब्लाफ मास्टर' का गीत 'गोविंदा आला रे'



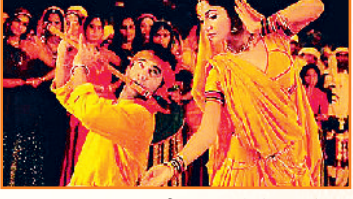
'सत्यम शिवम सुंदरम' का गीत 'यशोमती मैया से'

सबका प्यारा' आज भी जन्माष्टमी के अवसर पर सुना-गाया जाता है। मोहम्मद रफी की ही आवाज में फिल्म खानदान (1965) का गीत 'बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तक बुजवाला, ग्वाल-बाल इक-इक से पूछे कहाँ है मुरली वाला रे' श्रीकृष्ण पर केंद्रित सबसे लोकप्रिय गीतों में से एक है। **गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत:** कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और 'मटकी और गोविंदा' का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है भला। फिल्म 'बदला' (1974) में किशोर कुमार का गाया गीत 'शोर मच गया शोर, देखो आया माखन चोर', 'खुदा' (1982) का 'मच गया शोर सारी नगरी रे, आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे' युवाओं को न सिर्फ जोश

में भरता है बल्कि कृष्ण की लीलाओं का इस तरह से बखान करता है कि मन में कन्हैया की शैतानियां हिलोरे लेने लगती हैं। ये गीत आज भी होली-जन्माष्टमी जैसे उत्सवों पर बजाए जाते हैं। ऐसे ही 'ब्लाफ मास्टर' (1963) का गीत 'गोविंदा आला रे आला', 'ओह माइ गॉड' (2012) का 'गो गो गोविंदा', 'किसना : द वॉरर ओ पोएट' (2005) का 'वो किसना है' जैसे गीत भी खूब पॉपुलर हुए थे। **गोविंदा पर केंद्रित उमंग भरे गीत:** कृष्ण कन्हैया पर केंद्रित गीतों की बात हो और 'मटकी और गोविंदा' का जिक्र न हो, ऐसा कैसे हो सकता है भला। फिल्म 'बदला' (1974) में किशोर कुमार का गाया गीत 'शोर मच गया शोर, देखो आया माखन चोर', 'खुदा' (1982) का 'मच गया शोर सारी नगरी रे, आया बिरज का बांका संभाल तेरी गगरी रे' युवाओं को न सिर्फ जोश

श्रीकृष्ण पर केंद्रित गैर फिल्मी गीत भी हुए लोकप्रिय

श्रीकृष्ण पर केंद्रित लोकप्रिय फिल्मी गीतों के अतिरिक्त भजन गायकों और लोकगायकों द्वारा गाए कुछ गीत भी बहुत पॉपुलर हुए हैं। उदाहरण के तौर पर 'अरे झरपालों कन्हैया से कह दो', 'छोटी-छोटी मैया, छोटे-छोटे ग्वाल', हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की', अच्युतम केशवम कृष्ण दामोदरम, 'राधे राधे जपो चले आरों बिहारी' जैसे गीतों का जिक्र किया जा सकता है। ये ऐसे गीत हैं जो घर-घर में और मंदिरों में खूब सुने-सुनाए जाते हैं।



फिल्म 'लगान' का गीत 'राधा कैसे न जले'